प्रश्न बैंक 2025

कक्षा - XII

विषय - इतिहास (कोड : 027)

नोट : प्रत्येक प्रश्न के साथ उत्तर निर्माण हेतु सांकेतिक मूल्य बिंदु प्रदान किए गए हैं।

	अध्याय 1 - इंटें मनके तथा अस्थियां **हड़प्पा सभ्यता**	**मुख्य परीक्षा / पूरक परीक्षा**
	1 अंक के प्रश्न	
1.	सिंधु घाटी सभ्यता के पतन के लिए संभावित कारण निम्नलिखित में से कौन-से थे? सही विकल्प का चयन कीजिए : I. नदी मार्ग में परिवर्तन II. जलवायु परिवर्तन III. ग्रामीण जीवनशैली IV. शिल्प और व्यापार का ह्रास विकल्प : (A) I और II (B) II और III (C) III और IV (D) II और IV	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (A) I और II	
2	सर जॉन मार्शल के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-से कथन सही हैं? I. वह भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के डायरेक्टर जनरल थे। II. वह हड़प्पा मुहरों के महत्व को समझने में चूक गए। III. वह उत्खनन में स्तरीकरण का प्रयोग करते थे। IV. उन्होंने पूरे विश्व के समक्ष सिंधु घाटी सभ्यता की खोज की घोषणा की। विकल्प : (A) I और II (B) I और III	**पूरक परीक्षा**

	(C) I और IV (D) II और III **उपयुक्त विकल्प: (C) I और IV**	
3.	दिए गए हड़प्पा कालीन चित्र की पहचान कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए: 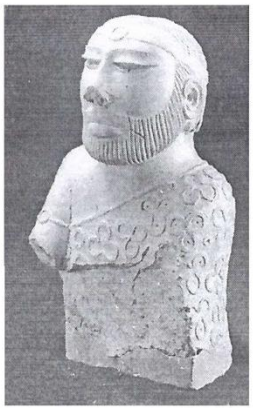 (A) प्रोटो-शिव (B) ऋग्वैदिक रुद्र (C) पुरोहित-राजा (D) व्यापारी-राजा	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (C) पुरोहित-राजा	
4	निम्नलिखित में से किस वर्तमान देश में मोहनजोदड़ो का प्राचीन नगर स्थित है? (A) भारत (B) पाकिस्तान (C) चीन (D) म्यांमार	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (B) पाकिस्तान	
5	हड़प्पा लिपि के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है? (A) यह लिपि वर्णात्मक (alphabetical) थी। (B) इसे बाएँ से दाएँ लिखा जाता था। (C) इस लिपि का अब तक पठन नहीं हो पाया है। (D) इस लिपि में कुछ ही संकेत या चिह्न हैं।	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (C) इस लिपि का अब तक पठन नहीं हो पाया है।	

6	हड़प्पा सभ्यता की किन स्थलों से हल (हल की प्रतिमाएँ) के मिट्टी के खिलौने (terracotta models) प्राप्त हुए हैं? (A) कालीबंगन और धोलावीरा (B) शोर्टुगाई और लोथल (C) बनावली और चोलिस्तान (D) सांगौल और राखीगढ़ी	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (A) कालीबंगन और धोलावीरा	
7	नीचे दो कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें, अभिकथन (A) और कारण (R)। इन्हें ध्यान से पढ़ें और सही विकल्प चुनें। अभिकथन (A): हड़प्पा एक अच्छी तरह से योजनाबद्ध शहर था। कारण (R): इसमें एक अच्छी तरह से योजनाबद्ध नाली व्यवस्था थी। विकल्प: (A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) का सही कारण है। (B) (A) और (R) दोनों सही हैं लेकिन (R), (A) का सही कारण नहीं है। (C) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है। (D) (R) सही है, लेकिन (A) गलत है।	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) का सही कारण है।	
8	हड़प्पा वास्तुकला की निम्नलिखित में से कौन सी एक विशिष्ट विशेषता थी? विकल्प: (A) लकड़ी का उपयोग (B) लोहे का उपयोग (C) ईंटों का उपयोग (D) संगमरमर का उपयोग	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (C) ईंटों का उपयोग	
9	निम्नलिखित में से कौन-सा कथन हड़प्पा में शहरी नियोजन की एकरूपता को सबसे अच्छी तरह स्पष्ट करता है?	**पूरक परीक्षा**

	विकल्प: (A) केंद्रीय अधिकार की उपस्थिति (B) शहर-राज्यों द्वारा प्रबंधन (C) जनजातीय नेतृत्व का संगठन (D) खानाबदोश शासन प्रणाली	
	उपयुक्त विकल्प: (A) केंद्रीय अधिकार की उपस्थिति	
10	निम्नलिखित में से कौन-से कथन हड़प्पा की मुहरों का सटीक वर्णन करते हैं? **कथन:** I. हड़प्पा की मुहरों पर अक्सर जानवरों के आकृतियाँ बनी होती थीं। II. हड़प्पा की मुहरें प्रतीकों वाली टेराकोटा से बनी होती थीं। III. हड़प्पा की मुहरें सैन्य विजयों के लिए जानी जाती थीं। IV. हड़प्पा की मुहरों का उपयोग मुख्य रूप से दफन संस्कारों में किया जाता था। **विकल्प:** (A) कथन I और II सही हैं। (B) कथन I और III सही हैं। (C) कथन II और III सही हैं। (D) कथन III और IV सही हैं।	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (A) कथन I और II सही हैं।	
11	निम्नलिखित में से कौन सी विधि पुरातत्वविदों द्वारा हड़प्पा समाज में सामाजिक अंतरों का अध्ययन करने के लिए प्राथमिक रूप से उपयोग की जाती थी? विकल्प: **(A)** फसल चक्र का अध्ययन करना **(B)** मुहरों के डिजाइन का विश्लेषण करना **(C)** दफन रीतियों की जांच करना **(D)** धार्मिक विश्वासों का अध्ययन करना	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (C) दफन रीतियों की जांच करना	
	3 अंक के प्रश्न	

1	"इतिहासकार हड़प्पा की मुहरों को एक विशिष्ट पुरावशेष मानते हैं।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : • हड़प्पा की मुहरें बड़ी संख्या में प्राप्त हुई हैं। • ये सामान्यतः **स्टियाटाइट (soapstone)** से बनी होती थीं। • इन पर पशुओं की आकृतियाँ (एकश्रृंगी, बैल, हाथी) अंकित होती थीं। • अधिकांश मुहरों पर **हड़प्पा लिपि** के चिह्न पाए जाते हैं। • इनका प्रयोग व्यापारिक वस्तुओं पर **स्वामित्व और पहचान** के लिए किया जाता था। • मेसोपोटामिया में भी ऐसी मुहरें मिली हैं, जिससे **अंतरराष्ट्रीय व्यापार** का संकेत मिलता है। • इसलिए इतिहासकार मुहरों को हड़प्पा सभ्यता का **विशिष्ट और महत्वपूर्ण पुरावशेष** मानते हैं।	
2	"हड़प्पावासी अपने उन्नत नगर नियोजन के लिए प्रसिद्ध थे।" इस कथन को उपयुक्त तर्कों सहित स्पष्ट कीजिए।	**मुख्य परीक्षा**

	सांकेतिक मूल्य बिंदु :
	• हड़प्पा के नगर **ग्रिड पद्धति** पर बसे थे।
	• सड़कें एक-दूसरे को **समकोण पर काटती थीं**।
	• नगर दो भागों में विभाजित थे—
	  ○ **ऊँचा दुर्ग क्षेत्र (Citadel)**
	  ○ **निचला नगर**
	• मकान पकी हुई ईंटों से बने होते थे।
	• प्रत्येक घर में **निजी स्नानागार** और कुएँ पाए जाते थे।
	• नगरों में **उन्नत जल निकासी प्रणाली** थी।
	• इससे स्पष्ट होता है कि हड़प्पावासी उत्कृष्ट नगर योजनाकार थे।	

3	लंबी दूरी के संचार को सुगम बनाने के लिए हड़प्पावासियों द्वारा मुहरों और मुहरबंदियों का प्रयोग क्यों किया जाता था? उदाहरण सहित समझाइए।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : • हड़प्पावासी दूरस्थ क्षेत्रों से व्यापार करते थे।	

	▯ व्यापारिक वस्तुओं पर **मुहर लगाकर पैकेट सील किए जाते थे**। ▯ इससे वस्तु की **प्रामाणिकता और स्वामित्व** सुनिश्चित होता था। ▯ मुहरें पहचान के प्रतीक के रूप में कार्य करती थीं। ▯ लोथल और मोहनजोदड़ो से मुहरबंदियाँ मिली हैं। ▯ मेसोपोटामिया में हड़प्पा की मुहरें मिलने से **दूरस्थ संचार और व्यापार** सिद्ध होता है।	
4	"हड़प्पा की प्रशासन व्यवस्था को लेकर पुरातत्वविदों के विभिन्न मत थे।" इस कथन को उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : • कुछ पुरातत्वविदों के अनुसार हड़प्पा में **केंद्रीकृत प्रशासन** था। • नगर नियोजन की एकरूपता इस विचार को समर्थन देती है। • कुछ विद्वान मानते हैं कि **व्यापारी वर्ग** प्रशासन में प्रमुख था। • किसी राजा, महल या शाही समाधि के प्रमाण नहीं मिले हैं। • कुछ इतिहासकार इसे **नगर-राज्य आधारित व्यवस्था** मानते हैं। • इसलिए हड़प्पा की प्रशासन प्रणाली को लेकर **एकमत नहीं है**।	
5	**हड़प्पा के पतन के संबंध में इतिहासकारों के विचारों की व्याख्या कीजिए।**	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : ▯ **नदी मार्गों में परिवर्तन से कृषि प्रभावित हुई।** ▯ **जलवायु परिवर्तन के कारण सूखा पड़ा।** ▯ **व्यापार और शिल्प का ह्रास हुआ।** ▯ **नगर धीरे-धीरे ग्रामीण जीवन में बदल गए।** ▯ **पहले माने जाने वाले आर्य आक्रमण सिद्धांत को अब अस्वीकार किया गया है।** ▯ **पतन एक धीमी और बहु-कारक प्रक्रिया थी, न कि अचानक घटना।**	

	4 अंक के प्रश्न	
1	दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **अब तक खोजी गई प्राचीनतम प्रणाली** नालियों के विषय में मैके लिखते हैं : "निश्चित रूप से यह अब तक खोजी गई सर्वथा संपूर्ण प्राचीन प्रणाली है ।" हर आवास गली की नालियों से जोड़ा गया था । मुख्य नाले गारे में जमाई गई ईंटों से बने थे और इन्हें ऐसी ईंटों से ढँका गया था जिन्हें सफ़ाई के लिए हटाया जा सके । कुछ स्थानों पर ढँकने के लिए चूना पत्थर की पट्टिका का प्रयोग किया गया था । घरों की नालियाँ पहले एक हौदी या मलकुंड में खाली होती थीं जिसमें ठोस पदार्थ जमा हो जाता था और गंदा पानी गली की नालियों में बह जाता था । बहुत लंबे नालों में कुछ अंतरालों पर सफ़ाई के लिए हौदियाँ बनाई गई थीं । यह पुरातत्व का एक अजूबा ही है कि "मलबे, मुख्यत: रेत के छोटे-छोटे ढेर सामान्यत: निकासी के नालों के अगल-बगल पड़े मिले हैं जो दर्शाते हैं..... कि नालों की सफ़ाई के बाद कचरे को हमेशा हटाया नहीं जाता था ।" अर्नेस्ट मैके, *अर्ली इंडस सिविलाईज़ेशन, 1948* जल निकास प्रणालियाँ केवल बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं थीं बल्कि ये कई छोटी बस्तियों में भी मिली थीं । उदाहरण के लिए; लोथल में आवासों के निर्माण के लिए जहाँ कच्ची ईंटों का प्रयोग हुआ था, वहीं नालियाँ पक्की ईंटों से बनाई गई थीं ।	**मुख्य परीक्षा**
	हड़प्पा के शहरों में जल निकासी प्रणालियों में एकरूपता के पीछे संभावित कारण का आकलन कीजिए । 1	
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **नगर नियोजन में मानकीकरण (standardization) का पालन किया गया।** **संभवतः केंद्रीय या साझा प्रशासनिक नियंत्रण था।** **स्वच्छता को सामाजिक प्राथमिकता दी जाती थी।** **अभियंताओं और शिल्पकारों के लिए सामान्य निर्माण नियम रहे होंगे।** **विभिन्न नगरों के बीच सांस्कृतिक एकता विद्यमान थी।**	
	जल निकासी के नालों के किनारे रेत के ढेर मिलने के निहितार्थ का विश्लेषण कीजिए ।	
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : • **रेत के ढेर फिल्टर के रूप में कार्य करते थे।** • **ठोस कचरे को नालियों में जाने से रोकते थे।** • **नालियों की नियमित सफाई और रखरखाव का संकेत मिलता है।**	

	• **इससे हड़प्पावासियों की व्यावहारिक और वैज्ञानिक सोच प्रकट होती है।**	
	हड़प्पा जल निकासी प्रणाली के प्रभावों का आकलन कीजिए ।	
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **नगरों में उच्च स्तर की स्वच्छता बनी रहती थी।** **जलजनित रोगों की संभावना कम होती थी।** **शहरी जीवन अधिक स्वस्थ और व्यवस्थित था।** **यह प्रणाली हड़प्पा के उन्नत नगर नियोजन की पहचान बन गई।** **बाद की सभ्यताओं के लिए प्रेरणा स्रोत सिद्ध हुई।**	
	8 अंक के प्रश्न	
1	हड़प्पा की पुरातात्त्विक खोजों से सिंधु घाटी सभ्यता की नगर नियोजन प्रणाली किस प्रकार स्पष्ट होती है? उदाहरणों सहित समझाइए।	**पूरक परीक्षा**

	सांकेतिक मूल्य बिंदु :
	
	• हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, धोलावीरा और कालीबंगन से **सुनियोजित नगरों के अवशेष** प्राप्त हुए हैं।
	• नगरों का निर्माण **ग्रिड पद्धति** पर किया गया था।
	• सड़कें उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम दिशा में थीं।
	• नगर दो भागों में विभाजित थे–
	  ○ ऊँचा दुर्ग क्षेत्र
	  ○ निचला आवासीय क्षेत्र
	• मकान **मानकीकृत पकी हुई ईंटों** से बने थे।
	• प्रत्येक घर में **निजी स्नानागार** और जल निकासी की व्यवस्था थी।
	• नालियाँ ढकी हुई थीं और गड्ढों (सेसपिट) से जुड़ी थीं।
	• मोहनजोदड़ो का **महान स्नानागार** सामुदायिक उपयोग का प्रमाण देता है।
	• धोलावीरा की **जल संरक्षण प्रणाली** नगर नियोजन की उन्नत सोच को दर्शाती है।
	• इन खोजों से स्पष्ट होता है कि हड़प्पावासी उच्च स्तर के नगर योजनाकार थे।	

2	हड़प्पा सभ्यता की समझ को विकसित करने में पुरातत्वविदों की भूमिकाओं और उनकी कार्यप्रणालियों ने किस प्रकार योगदान दिया है? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : ▯ **सर जॉन मार्शल** ने सिंधु घाटी सभ्यता की खोज की घोषणा की। ▯ **दयाराम साहनी** ने हड़प्पा स्थल का उत्खनन किया। ▯ **आर. डी. बनर्जी** ने मोहनजोदड़ो की खुदाई की। ▯ पुरातत्वविदों ने **स्तरीकृत उत्खनन (stratigraphy)** का प्रयोग किया। ▯ प्राप्त वस्तुओं का **वर्गीकरण और तुलनात्मक अध्ययन** किया गया। ▯ मुहरों, बर्तनों और औजारों से **आर्थिक और सामाजिक जीवन** को समझा गया। ▯ रेडियोकार्बन डेटिंग से सभ्यता की **काल-निर्धारण** में सहायता मिली। ▯ धोलावीरा और लोथल की खुदाई से **व्यापार और जल प्रबंधन** की जानकारी मिली। ▯ पुरातत्वविदों ने लेखन, स्थापत्य और तकनीक के आधार पर सभ्यता की **समग्र तस्वीर** प्रस्तुत की।	
	अध्याय 2 - राजा, किसान और नगर	
	1 अंक के प्रश्न	
1	निम्नलिखित में से कौन-से राराजवंश 'तमिलकम' में स्थित थीं? विकल्प: (A) गुप्त, मौर्य, चालुक्य (B) चोल, चेर, पांड्य (C) सातवाहन, शक, पांड्य (D) सातवाहन, शक, कुषाण	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (B) चोल, चेर, पांड्य	
2	स्तंभ I का स्तंभ II से मिलान कीजिए और सही विकल्प चुनिए : स्तंभ I (प्राचीन सिक्के) – स्तंभ II (शासक) a. पंच-चिह्नित सिक्के – i. यौधेय b. प्रथम स्वर्ण सिक्के – ii. गुप्त	**पूरक परीक्षा**

	c. शानदार स्वर्ण सिक्के – iii. कुषाण d. ताम्र सिक्के – iv. मौर्य विकल्प: (A) a-i, b-iii, c-ii, d-iv (B) a-iv, b-iii, c-ii, d-i (C) a-i, b-ii, c-iv, d-iii (D) a-iv, b-ii, c-i, d-iii	
	उपयुक्त विकल्प: (B)	
3	स्तंभ I का स्तंभ II से मिलान कीजिए और निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए : **स्तंभ-I (प्राचीन महाजनपद)** / **स्तंभ-II (वर्तमान क्षेत्र)** a. मगध — I. कन्धार (पूर्वी अफ़गानिस्तान) b. अवंति — II. अयोध्या (उत्तर प्रदेश) c. गन्धार — III. पटना (बिहार) d. कौशल — IV. उज्जैन (मध्य प्रदेश) **विकल्प :** (A) a: III, b: II, c: I, d: IV (B) a: IV, b: II, c: I, d: III (C) a: III, b: IV, c: I, d: II (D) a: II, b: I, c: III, d: IV	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (C)	
4	प्रभावती गुप्ता किस भूमिका के लिए सर्वाधिक जानी जाती हैं? (A) अशोक की पत्नी और बौद्ध संघ की प्रवर्तक (B) मौर्य साम्राज्य की रानी और बौद्ध धर्म की प्रवर्तक (C) समुद्रगुप्त की पत्नी और गुप्तकालीन कवयित्री (D) चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री और वाकाटक नरेश की पत्नी	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (D) चंद्रगुप्त द्वितीय की पुत्री और वाकाटक नरेश की पत्नी	
5	निम्नलिखित में से किस राजवंश से रानी प्रभावती का संबंध था? (A) कन्व (B) शक	**मुख्य परीक्षा**

	(C) वाकाटक (D) मौर्य	
	उपयुक्त विकल्प: (C) वाकाटक	
	3 अंक के प्रश्न	
1	"अशोक के अभिलेख अशोक के प्रशासन को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं।" - इस कथन की व्याख्या कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : • अशोक के अभिलेख शिलाओं और स्तंभों पर खुदे हुए हैं, जो सीधे शासक के आदेशों को दर्शाते हैं। • इन अभिलेखों से अशोक की **धम्म नीति**, नैतिक शासन और प्रजा-कल्याण की भावना का पता चलता है। • अभिलेखों में अधिकारियों (धम्ममहामात्रों) की नियुक्ति और उनके कर्तव्यों का उल्लेख मिलता है। • प्रशासन में न्याय, अहिंसा, धार्मिक सहिष्णुता और लोक-कल्याण के उपायों की जानकारी मिलती है। • ये अभिलेख अशोक के शासन को समझने का **प्रत्यक्ष और प्रमाणिक स्रोत** हैं।	
2	"मौर्य साम्राज्य का इतिहास अनेक प्रकार के स्रोतों के आधार पर निर्मित हुआ है।" - इस कथन की व्याख्या कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : • मौर्य इतिहास के लिए साहित्यिक, पुरातात्विक और विदेशी विवरण जैसे विभिन्न स्रोत उपलब्ध हैं। • इन स्रोतों के तुलनात्मक अध्ययन से मौर्य प्रशासन, अर्थव्यवस्था और समाज की जानकारी मिलती है। • कोई एक स्रोत पूर्ण नहीं है, इसलिए विभिन्न स्रोत एक-दूसरे की जानकारी को पूरा करते हैं।	
3	मौर्य साम्राज्य के बारे में जानने के तीन स्रोत बताइए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : • **अशोक के अभिलेख** (शिलालेख और स्तंभ लेख) • **कौटिल्य का अर्थशास्त्र** • **मेगस्थनीज की 'इंडिका'**	

	4 अंक के प्रश्न	
	दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : *1+1+2=4* **प्रभावती गुप्त और दंगुन गाँव** प्रभावती गुप्त ने अपने अभिलेख में यह कहा है : प्रभावती *ग्रामकुटुंबिनों* (गाँव के गृहस्थ और कृषक), ब्राह्मणों और दंगुन गाँव के अन्य वासियों को आदेश देती है ... "आपको ज्ञात हो कि कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि को धार्मिक पुण्य प्राप्ति के लिए इस ग्राम को जल अर्पण के साथ आचार्य चनालस्वामी को दान किया गया है । आपको इनके सभी आदेशों का पालन करना चाहिए। एक *अग्रहार* के लिए उपयुक्त निम्नलिखित रियायतों का निर्देश भी देती हूँ । इस गाँव में पुलिस या सैनिक प्रवेश नहीं करेंगे । दौरे पर आने वाले शासकीय अधिकारियों को यह गाँव घास देने और आसन में प्रयुक्त होने वाली जानवरों की खाल और कोयला देने के दायित्व से मुक्त हैं । साथ ही वे मदिरा खरीदने और नमक हेतु खुदाई करने के राजसी अधिकार को कार्यान्वित किए जाने से मुक्त हैं । इस गाँव को खनिज-पदार्थ और *खदिर* वृक्ष के उत्पाद देने से भी छूट है । फूल और दूध देने से भी छूट है । इस गाँव का दान इसके भीतर की संपत्ति और बड़े-छोटे सभी करों सहित किया गया है ।"	**पूरक परीक्षा**
	प्रभावती गुप्त द्वारा भूमि-अनुदान किसे दिया गया ?	
	उपयुक्त विकल्प: प्रभावती गुप्त द्वारा भूमि-अनुदान ब्राह्मणों को दिया गया।	
	यह स्रोत हमें महिलाओं द्वारा संपत्ति के स्वामित्व के बारे में क्या सूचित करता है ?	
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : • महिलाएँ भूमि की **स्वामिनी हो सकती थीं** और उसे दान देने का अधिकार रखती थीं। • प्रभावती गुप्त द्वारा भूमि-अनुदान दिए जाने से स्पष्ट होता है कि **स्त्रियों को संपत्ति पर कानूनी अधिकार** प्राप्त थे। • शाही परिवार की महिलाएँ प्रशासनिक और आर्थिक निर्णय ले सकती थीं।	
	भूमि-अनुदान प्राप्तकर्ताओं को क्या विशेषाधिकार दिए गए थे ?	
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : • उन्हें दान में दी गई भूमि पर **पूर्ण स्वामित्व अधिकार** प्राप्त होता था। • वे उस भूमि से प्राप्त **राजस्व (कर)** स्वयं रखने के अधिकारी होते थे। • राजकीय अधिकारी उस भूमि में **हस्तक्षेप नहीं कर सकते थे**। • भूमि पर रहने वाले किसानों से कर वसूलने का **अधिकार प्राप्तकर्ता को** होता था।	

	□ कई मामलों में उन्हें **न्यायिक अधिकार** भी दिए जाते थे।	
	8 अंक के प्रश्न	
1	प्राचीन भारतीय समाज में भूमि-दानों की प्रकृति और विशेषताओं क परिक्षण कीजिए।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : • भूमि-दान सामान्यतः **ब्राह्मणों और धार्मिक संस्थाओं** को दिया जाता था। • दान प्रायः **ताम्रपत्रों** में दर्ज किए जाते थे, जिससे वे कानूनी रूप से मान्य होते थे। • भूमि-दान के साथ **राजस्व और प्रशासनिक अधिकार** भी दिए जाते थे। • दान प्राप्त भूमि पर राज्य के अधिकारियों का हस्तक्षेप नहीं होता था। • भूमि-दान व्यवस्था से **सामंती प्रवृत्तियों** को बढ़ावा मिला।	
2	छठी शताब्दी ईसा पूर्व से कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए अपनाई गई विभिन्न रणनीतियों की जाँच कीजिए।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : □ **लोहे के औजारों** (हल, फाल) के प्रयोग से भूमि की गहरी जुताई संभव हुई। □ **सिंचाई के साधनों** जैसे कुएँ, तालाब और नहरों का विकास हुआ। □ जंगलों की कटाई कर **नई कृषि भूमि** तैयार की गई। □ कृषि कार्यों में **संगठित श्रम** का प्रयोग बढ़ा। □ शासकों द्वारा किसानों को **संरक्षण और प्रोत्साहन** दिया गया।	
3	गुप्त साम्राज्य के बारे में जानने के तीन स्रोतों की व्याख्या कीजिए।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : □ **अभिलेख**: प्रयाग प्रशस्ति से गुप्त शासकों की उपलब्धियों की जानकारी मिलती है। □ **सिक्के**: स्वर्ण मुद्राओं से आर्थिक समृद्धि और शासकों की उपाधियों का ज्ञान होता है।	

	□ **साहित्यिक ग्रंथ**: कालिदास के ग्रंथों से सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का चित्र मिलता है।	
4	प्राचीन भारतीय मुद्रा-व्यवस्था की तीन विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : □ प्रारंभिक काल में **पंच-चिह्नित सिक्कों** का प्रचलन था। □ स्वर्ण, रजत और ताम्र धातुओं से सिक्के बनाए जाते थे। □ सिक्कों पर **राजाओं के नाम, प्रतीक और उपाधियाँ** अंकित होती थीं। □ मुद्रा का प्रयोग **व्यापार और कर वसूली** में किया जाता था।	
	अध्याय 3 - बंधुत्व, जाति तथा वर्ग	
	1 अंक के प्रश्न	
1	कल्पना कीजिए कि आपको महाभारत के क्रिटिकल एडिशन पर एक शोध रिपोर्ट लिखनी है, जिसे वी. एस. सुखथंकरऔर उनकी टीम ने संपादित किया था। निम्नलिखित में से कौन-सा इस संस्करण की एक विशिष्ट विशेषता का वर्णन करता है? विकल्प: (A) यह भगवद्गीता और कृष्ण पर केंद्रित था। (B) इसे आधुनिक भाषा में सुलभ बनाया गया। (C) इसने पाठ के सभी क्षेत्रीय संस्करणों का अध्ययन किया। (D) इसमें दार्शनिक टीकाएँ और पौराणिक कथाएँ जोड़ी गईं।	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (C) इसने पाठ के सभी क्षेत्रीय संस्करणों का अध्ययन किया।	
2	यहाँ दो कथन दिए गए हैं - कथन (A) और कारण (R)। इन्हें ध्यान से पढ़िए और सही विकल्प चुनिए : कथन (A): सातवाहन शासक प्रायः मातृनामक उपाधियाँ धारण करते थे। कारण (R): सातवाहन शासकों के नाम उनकी माताओं के नाम से निकले थे। विकल्प: (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।	**पूरक परीक्षा**

	(B) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं, परंतु कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है। (C) कथन (A) सत्य है, परंतु कारण (R) असत्य है। (D) कथन (A) असत्य है, परंतु कारण (R) सत्य है।	
	उपयुक्त विकल्प: (A) कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं तथा कारण (R), कथन (A) की सही व्याख्या है।	
3	महाभारत काल के दौरान धर्मशास्त्र और धर्मसूत्रों में निर्धारित सामाजिक व्यवहार संहिता के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है ? (A) इन मानदंडों का पालन केवल ब्राह्मणों द्वारा किया जाता था । (B) इन मानदंडों का पालन सार्वभौमिक रूप से किया जा रहा था । (C) इन मानदंडों का पालन सार्वभौमिक रूप से नहीं किया गया । (D) केवल शासक इन मानदंडों का पालन करते थे ।	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (C) इन मानदंडों का पालन सार्वभौमिक रूप से नहीं किया गया।	
4	*महाभारत* को एक गतिशील ग्रंथ क्यों कहा जाता है ? निम्नलिखित में से सबसे उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए। (A) यह सभी संस्करणों में अपरिवर्तित और स्थिर है। (B) इसे विभिन्न संदर्भों में लगातार पुनर्व्याख्यायित किया गया है। (C) यह पूरी तरह से ऐतिहासिक तथ्यों पर केन्द्रित है। (D) यह स्थिर ग्रंथ है जिसमें समय के साथ कोई भिन्नता नहीं आई।	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (B) इसे विभिन्न संदर्भों में लगातार पुनर्व्याख्यायित किया गया है।	
	3 अंक के प्रश्न	
1	"इतिहासकार *महाभारत* का विश्लेषण करते समय अनेक पहलुओं पर विचार करते हैं ।" उपयुक्त उदाहरणों सहित कथन की व्याख्या कीजिए।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **□ इतिहासकार महाभारत को केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में देखते हैं।** **□ वे इसके रचनाकाल और दीर्घकालीन विकास पर विचार करते हैं, क्योंकि ग्रंथ समय-समय पर विस्तारित हुआ।** **□ महाभारत से समाज व्यवस्था जैसे वर्ण, जाति और स्त्रियों की स्थिति की जानकारी मिलती है।** **□ इसमें वर्णित राजनीतिक संघर्ष और राजधर्म से तत्कालीन शासन प्रणाली को समझा जाता है।**	

	□ धर्म की अवधारणा को इतिहासकार परिस्थिति-आधारित और गतिशील मानते हैं। **□ ग्रंथ में उल्लिखित भौगोलिक स्थान तत्कालीन सांस्कृतिक जीवन को दर्शाते हैं।**	
2	"महाभारत काल के दौरान कई समुदायों की सामाजिक प्रथाएँ ब्राह्मणवादी विचारों से भिन्न थीं।" उदाहरणों सहित कथन की व्याख्या कीजिए।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **□ महाभारत काल में समाज केवल ब्राह्मणवादी नियमों पर आधारित नहीं था, बल्कि विविध परंपराएँ और प्रथाएँ प्रचलित थीं।** **□ कई समुदाय ब्राह्मणवादी वर्ण-व्यवस्था को पूरी तरह नहीं मानते थे। *उदाहरण:* निषाद, वनवासी और घुमंतू समुदाय।** **□ स्त्रियों की स्थिति हर जगह समान नहीं थी और वे कई बार परंपरागत नियमों से अलग व्यवहार करती थीं।** ***उदाहरण:* द्रौपदी का सभा में प्रश्न करना और अपने अधिकारों की माँग करना।** **□ क्षत्रिय और अन्य समुदायों में वीरता और पराक्रम को जन्म से अधिक महत्व दिया जाता था।** ***उदाहरण:* कर्ण को उसकी योग्यता के कारण सम्मान मिलना।** **□ कुछ क्षेत्रों में भिन्न विवाह और उत्तराधिकार प्रथाएँ प्रचलित थीं।** ***उदाहरण:* बहुपति प्रथा (द्रौपदी का पाँच पांडवों से विवाह)।** **□ महाभारत में ऐसे अनेक प्रसंग हैं जो दिखाते हैं कि ब्राह्मणवादी आदर्शों को चुनौती दी जाती थी।**	
	8 अंक के प्रश्न	
1	"महाभारत काल के दौरान पारिवारिक रिश्तों की कुछ खास विशेषताएँ होती थीं।" इस कथन की व्याख्या उदाहरणों सहित कीजिए।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **□ महाभारत काल में परिवार संयुक्त परिवार व्यवस्था पर आधारित थे।** ***उदाहरण:* पांडव और कौरव एक ही वंश के सदस्य थे और एक विस्तृत परिवार में रहते थे।** **□ पितृसत्तात्मक व्यवस्था प्रमुख थी, जिसमें परिवार का मुखिया पुरुष होता था।** ***उदाहरण:* धृतराष्ट्र और पांडु का वंश-प्रमुख के रूप में स्थान।** **□ उत्तराधिकार को लेकर संघर्ष पारिवारिक रिश्तों में तनाव का कारण बनता था।** ***उदाहरण:* हस्तिनापुर के सिंहासन को लेकर पांडव–कौरव विवाद।**	

	□ स्त्रियों की भूमिका केवल घरेलू नहीं थी, वे नैतिक और सामाजिक प्रश्न उठाने में सक्षम थीं। *उदाहरण:* द्रौपदी द्वारा सभा में अन्याय के विरुद्ध प्रश्न करना। □ विवाह संबंधों से राजनीतिक और पारिवारिक गठबंधन बनते थे। *उदाहरण:* कुंती और गांधारी के विवाह से वंशीय संबंधों का सुदृढ़ होना। □ परिवार में कर्तव्य और धर्म को रिश्तों से ऊपर माना जाता था। *उदाहरण:* अर्जुन का धर्मयुद्ध के लिए अपने ही संबंधियों से युद्ध करना।	
2	"राजत्व क्षत्रिय कुल में जन्म लेने पर शायद ही निर्भर करता था बल्कि यह हर उस व्यक्ति के लिए होता था जो समर्थन और संसाधन जुटा सके ।" इस कथन की व्याख्या छठी शताब्दी ई.पू. के बाद के उदाहरणों सहित कीजिए ।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : □ शास्त्रों की अवहेलना: हालांकि धर्मसूत्रों और धर्मशास्त्रों में स्पष्ट रूप से लिखा गया था कि केवल क्षत्रिय ही राजा हो सकते हैं, लेकिन व्यवहारिक राजनीति में इस नियम का पालन हमेशा नहीं हुआ। शक्ति और योग्यता को जन्म से ऊपर रखा गया। □ मौर्यों की रहस्यमयी उत्पत्ति: मौर्य वंश के संस्थापक चंद्रगुप्त मौर्य की सामाजिक पृष्ठभूमि को लेकर विवाद है। ब्राह्मण ग्रंथों ने उन्हें 'वृषल' या निम्न कुल का बताया है। इसके बावजूद, उन्होंने भारत के पहले विशाल साम्राज्य की स्थापना की, जो यह दर्शाता है कि संसाधन और कूटनीतिक समर्थन (चाणक्य द्वारा) अधिक महत्वपूर्ण थे। □ ब्राह्मण शासकों का उदय: मौर्यों के पतन के बाद, सत्ता शुंग और कण्व वंशों के हाथ में आई। ये दोनों राजवंश ब्राह्मण थे। शास्त्रों के अनुसार ब्राह्मणों का कार्य शासन करना नहीं था, फिर भी उन्होंने अपनी सैन्य क्षमता के बल पर राजत्व प्राप्त किया। □ विदेशी 'म्लेच्छ' शासक: मध्य एशिया से आए शक और कुषाण शासकों को ब्राह्मणों द्वारा 'म्लेच्छ' (अशुद्ध बाहरी) माना गया था। परंतु, अपनी मजबूत सैन्य शक्ति और संसाधनों के कारण उन्होंने उत्तर-पश्चिम भारत पर सफलतापूर्वक शासन किया। □ सातवाहनों का विरोधाभास: सातवाहन शासक गौतमीपुत्र श्री शातकर्णी ने स्वयं को 'अनोखा ब्राह्मण' कहा और क्षत्रियों के अहंकार को कुचलने का दावा किया। यह उदाहरण दिखाता है कि एक ही व्यक्ति धार्मिक रूप से ब्राह्मण और राजनीतिक रूप से राजा हो सकता था। □ संसाधनों का महत्व: सत्ता प्राप्त करने के लिए 'क्षत्रिय' होने से अधिक आवश्यक था कि व्यक्ति के पास सेना, धन और प्रशासनिक समर्थन जुटाने की क्षमता हो। जिसके पास ये संसाधन थे, उसे ही समाज में शासक के रूप में स्वीकार कर लिया जाता था। □ सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility): इस काल में राजत्व ने सामाजिक गतिशीलता का मार्ग प्रशस्त किया। यदि कोई व्यक्ति युद्ध में निपुण था और उसके पास समर्थकों का समूह था, तो वह राजपद का दावा कर सकता था, चाहे उसका जन्म किसी भी वर्ण में हुआ हो। □ वैधता प्राप्त करने के तरीके: जो शासक क्षत्रिय नहीं थे, वे अक्सर ब्राह्मणों को दान देकर, भव्य यज्ञ (जैसे अश्वमेध) करवाकर और अपनी वंशावली को पौराणिक देवताओं से जोड़कर अपनी 'राजत्व की वैधता' प्राप्त कर लेते थे।	

अध्याय 4 - विचारक विश्वास और इमारतें

1 अंक के प्रश्न

मुख्य परीक्षा

स्तंभ-I का मिलान स्तंभ-II से कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए

स्तंभ-I (सांची की मूर्तिकला)		स्तंभ-II (प्रतीकात्मक महत्त्व)	
a	रिक्त स्थान	i	महापरिनिब्बान का प्रतीक
b	गजलक्ष्मी	ii	सौभाग्य का प्रतीक
c	चक्र	iii	शुभ का प्रतीक
d	शालभंजिका	iv	बुद्ध के पहले उपदेश का प्रतीक

विकल्प :

	a	b	c	d
(A)	i	ii	iv	iii
(B)	ii	iii	i	iv
(C)	ii	i	iv	iii
(D)	iv	i	iii	ii

उपयुक्त विकल्प: (A) a - i, b - ii, c - iv, d - iii

मुख्य परीक्षा

निम्नलिखित जानकारी की सहायता से भारतीय इतिहास के शासक की पहचान कीजिए :

- भोपाल शासक
- 1868 से 1901 ई. तक शासन
- सांची स्तूप के संरक्षण में सहायता

(A) जहाँआरा बेगम (B) शाहजहाँ बेगम

(C) गुलबदन बेगम (D) रुख़सार बेगम

उपयुक्त विकल्प: (A) a-i, b-ii, c-iv, d-iii

मुख्य परीक्षा

पाँचवीं शताब्दी के देवगढ़ मंदिर की यह दी गई मूर्ति निम्नलिखित में से किस देवता की है ?

(A) इन्द्र (B) शिव

(C) रुद्र (D) विष्णु

उपयुक्त विकल्प: (D) विष्णु

मुख्य परीक्षा

वर्धमान महावीर निम्नलिखित में से किस धर्म से संबंधित हैं ?

(A) ईसाई धर्म (B) हिंदू धर्म

(C) बौद्ध धर्म (D) जैन धर्म

उपयुक्त विकल्प: (D) जैन

8 अंक के प्रश्न

1.	स्तूप, बौद्ध मान्यताओं और प्रथाओं से कैसे जुड़े थे ? साँची स्तूप की संरचनात्मक विशेषताओं की व्याख्या उदाहरणों सहित कीजिए। 4+	पूरक परीक्षा

सांकेतिक मूल्य बिंदु :

स्तूप बौद्ध धर्म में बुद्ध या अन्य महापुरुषों की अस्थियाँ या पवित्र अवशेष रखने वाला अर्धगोलाकार टीला-आकार का स्मारक था, जहाँ श्रद्धालु घुम्मकर पूजा, प्रदक्षिणा और ध्यान करते थे। सांची स्तूप इसकी उत्कृष्ट संरचनात्मक विशेषताओं और बारीक मूर्तिकला के कारण सर्वाधिक प्रसिद्ध उदाहरण है।

स्तूप और बौद्ध मान्यताएँ

- **स्तूप में बुद्ध की अस्थियाँ या प्रतीकात्मक अवशेष रखे जाते थे, इसलिए इसे अत्यंत पवित्र माना जाता था।**
- **श्रद्धालु स्तूप के चारों ओर प्रदक्षिणा (प्रदक्षिणापथ) लगाकर पुण्य कमाने और ध्यान करने की प्रथा निभाते थे, जो बौद्ध उपासना का मुख्य रूप था।**

स्तूप और बौद्ध परम्पराएँ

- **स्तूप की ऊर्ध्व दिशा में उठती रचना बौद्धों के लिए निर्वाण और ज्ञान की ओर आरोहण का प्रतीक मानी जाती थी।**
- **तोरणों पर खुदी जातक कथाएँ, बुद्ध के जीवन प्रसंग और बौद्ध प्रतीक (धर्मचक्र, कमल, हाथी आदि) धर्मोपदेश और लोक-शिक्षा का माध्यम थीं।**

सांची स्तूप : मूल संरचना

- **सांची स्तूप में ठोस ईंटों का ऊँचा अर्धगोलाकार गुंबद (अंड) चौकोर आधार पर बना है, जो बौद्ध ब्रह्मांड विज्ञान में मेरु पर्वत और ध्यानमग्न बुद्ध के शरीर का प्रतीक है।**
- **गुंबद के ऊपर चौकोर हरमिका और उससे उठती यष्टि पर छत्रों की श्रेणी बनी है, जो देवलोक और बुद्ध की आध्यात्मिक सत्ता को दर्शाती है।**

घेरा, रेलिंग और प्रदक्षिणापथ

- **स्तूप के चारों ओर पत्थर की वेदिका/रेलिंग बनाई गई है जो पवित्र क्षेत्र और सांसारिक क्षेत्र को अलग कर श्रद्धालुओं के लिए प्रदक्षिणा मार्ग तय करती है।**
- **यह पत्थर की घेराबंदी उस समय प्रचलित बाँस या लकड़ी की बाड़ की नकल करती है, जिससे साधारण से पवित्र स्थान की अवधारणा स्पष्ट होती है।**

तोरण द्वारों की विशेषताएँ

- **सांची स्तूप के चारों ओर चार भव्य तोरण चारों दिशाओं में बने हैं, जिन पर सूक्ष्म नक्काशी से बुद्ध के जीवन प्रसंग, जातक कथाएँ और विभिन्न बौद्ध प्रतीक उकेरे गए हैं।**
- **ये तोरण केवल प्रवेश द्वार नहीं, बल्कि शिल्पकला के माध्यम से धर्मचक्र, बोधि वृक्ष, खाली सिंहासन आदि रूपों से बुद्ध की उपस्थिति का प्रतीकात्मक बखान करते हैं।**

प्रतीकात्मक मूर्तिकला

	• तोरणों एवं रेलिंगों पर हाथी, घोड़े, सिंह, वृक्ष, स्त्री आकृतियाँ आदि इस प्रकार गढ़ी गई हैं कि वे बल, ज्ञान, समृद्धि और उर्वरता जैसी मान्यताओं को व्यक्त करती हैं। • खाली आसन, धर्मचक्र, पदचिह्न जैसी अनिरूपित प्रतिमाएँ बुद्ध के महापरिनिर्वाण, प्रथम धर्मदेशना और आध्यात्मिक मार्ग का सांकेतिक चित्रण करती हैं। ऐतिहासिक विकास • मूल सांची स्तूप मौर्य सम्राट अशोक के समय में ईंटों से बना, बाद में शुंग शासकों ने इसे पत्थर से आवृत्त कर बड़ा गुंबद, रेलिंग और तोरण जोड़े। • सांची की स्थापत्य शैली ने आगे के अनेक बौद्ध स्तूपों, विहारों और चैत्यगृहों की योजना व सजावट को प्रभावित किया, जिससे यह आदर्श रूप में प्रतिष्ठित हुआ।	
2.	"बौद्ध एवं ग़ैर-बौद्ध तत्त्वों ने मिलकर एक भव्य साँची की रचना की।" इस कथन की व्याख्या उदाहरणों सहित कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : बौद्ध एवं गैर-बौद्ध तत्त्वों ने मिलकर सांची को एक भव्य, बहु-धार्मिक सहयोग से निर्मित स्मारक बना दिया। सांची स्तूप के निर्माण और मरम्मत के लिए राजाओं, व्यापारिक संघों, साधारण स्त्री-पुरुष, भिक्षु-भिक्षुणी – सभी ने दान दिया; इन दाताओं में अनेक गैर-बौद्ध भी थे। 1. सतवाहन जैसे क्षत्रिय राजा, स्थानीय महाजन, हाथीदाँत-शिल्पी आदि ने भी तोरणों और वेदिकाओं के निर्माण में धन दिया, जिनकी प्रशस्तियाँ शिलालेखों में मिलती हैं। 2. तोरणों पर खुदी जातक कथाएँ बौद्ध हैं, लेकिन उनमें ग्रामीण जीवन, यज्ञ, विवाह, वृक्ष-पूजा जैसी समकालीन, लोक और वैदिक परम्पराएँ भी दिखाई देती हैं जो गैर-बौद्ध संस्कृति से आईं। 3. हाथी, घोड़े, यक्ष-यक्षिणी, लता-वल्लरी, कमल आदि अलंकरण उस समय की सामान्य धार्मिक-लोक आस्थाओं के प्रतीक थे, जिन्हें बौद्ध कलाकारों ने भी अपनाया। 4. शुंग, सतवाहन, कुषाण, गुप्त आदि कई राजवंश, जिनमें सब पूर्णत: बौद्ध नहीं थे, ने सांची परिसर में स्तूपों के साथ-साथ मन्दिर, स्तम्भ और अन्य इमारतें बनवाईं। 5. गुप्त काल में सांची में बुद्ध मूर्तियों के साथ कुछ हिंदू देवमन्दिर भी बने, जिससे बौद्ध और ब्राह्मण दोनों परम्पराएँ एक ही स्थल पर सह-अस्तित्व में दिखती हैं। 6. बाद में भोपाल की बेगमों जैसे शाहजहाँ बेगम और सुल्तान जहाँ बेगम (इस्लामी शासक) ने सांची के संरक्षण, मरम्मत, संग्रहालय और विश्राम-गृह के लिए उदार सहायता दी। 7. विदेशी विद्वान जॉन मार्शल आदि यूरोपीय पुरातत्वविदों ने खुदाई, संरक्षण और शोध कर सांची को विश्व-विरासत के रूप में प्रतिष्ठित किया, जो गैर-भारतीय और प्राय: गैर-बौद्ध योगदान का उदाहरण है।	
3.	जैन धर्म की शिक्षाओं और दर्शन की व्याख्या कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : जैन धर्म की मुख्य शिक्षाएँ • जैनों के अनुसार 24 तीर्थंकरों ने धर्म का प्रचार किया, जिनमें अंतिम तीर्थंकर महावीर हैं, जिन्होंने मोक्ष-मार्ग का स्पष्ट निरूपण किया। • मुक्ति के लिए त्रिरत्न – सम्यक् दर्शन (सही श्रद्धा), सम्यक् ज्ञान (सही ज्ञान) और सम्यक् चरित्र (सही आचरण) को आवश्यक माना गया है।	

	• पाँच महाव्रत: अहिंसा, सत्य, अचौर्य (अस्तेय), ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह – जैन नैतिकता की नींव हैं; संन्यासी इन्हें कठोर रूप में, गृहस्थ हल्के रूप में पालन करते हैं। जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धांत • अहिंसा जैन दर्शन का सर्वोच्च और केंद्रीय सिद्धांत है; विचार, वाणी और कर्म से किसी भी सजीव को चोट न पहुँचाना धार्मिक कर्तव्य माना जाता है। • अनेकांतवाद के अनुसार सत्य और वस्तु-जगत अनेक पहलुओं वाला है; कोई भी मत पूर्णतः एकतरफा सही नहीं, इसलिए अन्य दृष्टिकोणों के प्रति सहिष्णुता और बौद्धिक विनम्रता आवश्यक है। • स्याद्वाद अनेकांतवाद की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है, जिसमें किसी भी कथन को विभिन्न संभावित दृष्टियों (सातभंगी नय) से कहा जाता है, ताकि कट्टरता और अंध-निश्चय से बचा जा सके। • अपरिग्रह सिद्धांत अनुसार व्यक्ति को वस्तुओं, धन और संबंधों के प्रति आसक्ति घटाकर साधना, संयम और तप के माध्यम से कर्म बन्धन को नष्ट कर मोक्ष की अवस्था (केवलज्ञान) प्राप्त करनी चाहिए।	
4.	साँची स्तूप की मूर्तिकला की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : साँची स्तूप की संरचनात्मक विशेषताएँ: • अण्ड (Anda): यह एक अर्धगोलाकार टीला होता था जिसे 'अण्ड' कहा जाता था। • हर्मिका (Harmika): अण्ड के ऊपर एक चौकोर संरचना होती थी, जिसे देवताओं का निवास माना जाता था। • यष्टि और छत्र (Yashti & Chhatri): हर्मिका से एक मस्तूल निकलता था जिसे 'यष्टि' कहते थे, जिस पर अक्सर एक छतरी (छत्र) लगी होती थी। • तोरण द्वार (Gateways): साँची में चार भव्य नक्काशीदार प्रवेश द्वार हैं जहाँ से श्रद्धालु प्रवेश करते थे। • परिक्रमा पथ: श्रद्धालु पूर्वी तोरण द्वार से प्रवेश कर दक्षिणावर्त दिशा में परिक्रमा करते थे। साँची स्तूप की मूर्तिकला की विशेषताएँ साँची की मूर्तिकला केवल धार्मिक कहानियों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें लोक कला का भी समावेश था: • जातक कथाओं का अंकन: यहाँ पत्थरों पर वेस्सांतर जातक जैसी कहानियों को अत्यंत सजीवता से उकेरा गया है। • प्रतीकों का प्रयोग: बुद्ध को सीधे मानव रूप में न दिखाकर प्रतीकों (जैसे चरण चिह्न, चक्र, स्तूप) के माध्यम से दिखाया गया है। • प्रकृति और पशु: मूर्तियों में हाथी, घोड़े, बंदर और वनस्पति का व्यापक चित्रण है, जो मनुष्य और प्रकृति के संबंध को दर्शाता है।	
	अध्याय- 5. यात्रियों के नज़रिए से	

1.	नीचे दो कथन दिए गए हैं – अभिकथन (A) और कारण (R)। इनको ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए : *अभिकथन (A) :* अल-बिरूनी ने संस्कृत भाषा सीखी। *कारण (R) :* वह भारत की संस्कृति और पुस्तकों को समझना चाहता था। **विकल्प :** (A) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या करता है। (B) अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, परन्तु कारण (R), अभिकथन (A) की सही व्याख्या ***नहीं*** करता है। (C) अभिकथन (A) सही है, परन्तु कारण (R) ग़लत है। (D) अभिकथन (A) ग़लत है, परन्तु कारण (R) सही है।	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प : (A)	
2	निम्नलिखित में से कौन-से कथन इब्न बतूता के संदर्भ में सही हैं ? I. वह मोरक्को का वासी था। II. वह मुहम्मद बिन तुग़लक के दरबार में काज़ी था। III. उसने इब्राहिम लोदी के बारे में विस्तृत वर्णन दिया। IV. उसने मुग़ल साम्राज्य में शहरी समृद्धि का एक ज्वलंत विवरण प्रदान किया है। **विकल्प :** (A) I और II (B) II और III (C) I और IV (D) II और IV	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प : (A) I और II	
3.	अल-बरूनी का प्रमुख कार्य 'किताब-उल-हिंद' भारत के व्यापक अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण है। निम्नलिखित में से इसका प्राथमिक उद्देश्य क्या था ? (A) इस्लामी शिक्षाओं को बढ़ावा देना। (B) भौगोलिक स्थानों का मानचित्र बनाना। (C) संस्कृति और रीति-रिवाज़ों की आलोचना करना। (D) भारतीय संस्कृति का दस्तावेज़ीकरण करना।	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प : (D) भारतीय संस्कृति का दस्तावेजीकरण करना।	
4	इब्न बतूता अपनी व्यापक यात्राओं के दौरान अपरिचित संस्कृतियों और समाजों का अन्वेषण करने में सक्षम था। निम्नलिखित में से कौन सी योग्यता उसने सबसे अधिक विकसित की ? (A) नेतृत्व और न्यायिक प्रबंधन (B) सांस्कृतिक योग्यता और कौशलता (C) प्रशासनिक और सैन्य ज्ञान (D) वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञता	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प : (B) सांस्कृतिक योग्यता और कौशलता	

	4 अंक के प्रश्न	
	दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : *1+1+2=4* **यूरोप के लिए एक चेतावनी** बर्नियर चेतावनी देता है कि यदि यूरोपीय शासकों ने मुग़ल ढाँचे का अनुसरण किया तो : उनके राज्य इस प्रकार अच्छी तरह से जुते और बसे हुए, इतनी अच्छी तरह से निर्मित, इतने समृद्ध, इतने सुशिष्ट तथा फलते-फूलते नहीं रह जाएँगे जैसा कि हम उन्हें देखते हैं। दूसरी दृष्टि से हमारे शासक अमीर और शक्तिशाली हैं; और हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि उनकी और बेहतर और राजसी ढंग से सेवा हो। वे जल्द ही रेगिस्तान तथा निर्जन स्थानों के, भिखारियों तथा क्रूर लोगों के राजा बनकर रह जाएँगे जैसे कि वे जिनके विषय में मैंने वर्णन किया है। (मुग़ल शासक) ... हम उन महान शहरों और नगरों को खराब हवा के कारण न रहने योग्य अवस्था में पाएँगे, तथा विनाश की स्थिति में, जिनके जीर्णोद्धार की किसी को चिंता नहीं है, व्यक्त टीले और झाड़ियों अथवा घातक दलदल से भरे हुए खेत, जैसा कि पहले ही बताया गया है।	**पूरक परीक्षा**
	यूरोपीय राजाओं को बर्नियर ने क्या चेतावनी दी ?	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु: बर्नियर ने यूरोपीय राजाओं को चेतावनी दी कि यदि वे भी मुगल शासन की तरह भूमि और संपत्ति को पूरी तरह शासक के नियंत्रण में ले आएँगे, तो • किसानों की दशा बिगड़ेगी, • व्यापार नष्ट होगा, • और राज्य की आर्थिक समृद्धि समाप्त हो जाएगी।	
	उसने यूरोपीय राजाओं और मुग़ल बादशाहों की तुलना किस प्रकार की ?	

	सांकेतिक मूल्य बिंदु:
	बर्नियर ने तुलना इस आधार पर की–
	• यूरोप में:
	  ○ निजी संपत्ति का अधिकार था,
	  ○ कानून अपेक्षाकृत स्थिर थे,
	  ○ इसलिए कृषि और व्यापार फलते-फूलते थे।
	• मुगल भारत में:
	  ○ भूमि का स्वामी बादशाह माना जाता था,
	  ○ जागीरें अस्थायी थीं,
	  ○ इसलिए लोग दीर्घकालीन निवेश नहीं करते थे।	

	बर्नियर ने मुग़ल देहात का वर्णन कैसे किया ?	

	सांकेतिक मूल्य बिंदु: बर्नियर के अनुसार मुगल देहात– • निर्धन और उपेक्षित थे, • किसान अत्यधिक करों से दबे हुए थे, • गाँवों में समृद्धि और स्थायित्व का अभाव था। उसने देहात को "गरीबी, असुरक्षा और शोषण का प्रतीक" बताया, जहाँ किसान केवल जीवनयापन भर के लिए काम करता था।	
	अध्याय 6 - भक्ति सूफी परंपराएँ	
1.	निम्नलिखित में से कौन-से सूफ़ी दरगाह से संबंधित हैं ? I. मुरीद और मुर्शिद के बीच सिलसिला II. ज़ियारत III. कव्वाली IV. हवन **विकल्प :** (A) I, II और IV (B) II, III और IV (C) I, III और IV (D) I, II और III	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (D) I, II और III	
2	मीराबाई की काव्य रचनाएँ निम्नलिखित में से किस रूप में उपलब्ध हैं ? (A) वचन (B) शबद (C) भजन (D) अभंग	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (C) भजन	
3.	एक आधुनिक शहर में, मित्रों का एक समूह आज के समाज में कबीर की शिक्षाओं की प्रासंगिकता पर चर्चा करता है । कुछ का मानना है कि ये शिक्षाएँ अप्रासंगिक हैं जबकि अन्य समानता और प्रेम को बढ़ावा देने में उनके महत्त्व को देखते हैं । निम्नलिखित में से कौन सा परिदृश्य आज कबीर की प्रासंगिकता को सबसे अच्छी तरह से दर्शाता है ? (A) कबीर के ऐतिहासिक संदर्भ पर बहस (B) आध्यात्मिकता को अप्रासंगिक बनाने पर चर्चा (C) केवल सामाजिक मानदंडों और परंपराओं पर ध्यान (D) ईश्वर के साथ सरल संबंध की खोज	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (D)	

4	निम्नलिखित में से किसने गुरु तेग बहादुर जी की रचनाओं को गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित किया ? (A) गुरु हरगोबिंद साहिब जी (B) गुरु गोबिंद सिंह जी (C) गुरु अर्जुन देव जी (D) गुरु हरकृष्ण साहिब जी	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (A)	
5	वीरशैव अथवा लिंगायत परंपरा के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है ? (A) वे ब्रह्म की सर्वोच्च सत्ता पर बल देते हैं । (B) वे मृत लोगों को नहीं दफनाते हैं । (C) उनका विश्वास है कि मृत्योपरांत भक्त शिव में विलीन हो जाता है । (D) वे विष्णु के अनुयायी हैं ।	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (C)	
6.	निम्नलिखित जानकारी की सहायता से सोलहवीं शताब्दी के भारत के शासक की पहचान कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए : – उसने चौदह बार अजमेर की तीर्थयात्रा की । – उसने अजमेर शरीफ़ से नयी जीत के लिए और पुत्रों के जन्म का आशीर्वाद माँगा । **विकल्प :** (A) सुल्तान गयासुद्दीन खिलजी (B) शाहजहाँ (C) अकबर (D) मुहम्मद बिन तुगलक	
	उपयुक्त विकल्प: (C)	
	3 अंक के प्रश्न	
1	कबीर की मुख्य शिक्षाओं की व्याख्या कीजिए ।	
	सांकेतिक मूल्य बिंदु: 1. निर्गुण भक्ति	

कबीर ईश्वर को निर्गुण, निराकार और सर्वव्यापी मानते थे।
उनके अनुसार ईश्वर—

- न मंदिर में सीमित है,
- न मस्जिद में,
- बल्कि मनुष्य के हृदय में निवास करता है।

"मोको कहाँ ढूँढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।"

2. कर्मकांड और आडंबर का विरोध

कबीर ने हिंदू और मुस्लिम दोनों धर्मों के

- बाह्य अनुष्ठानों,
- रूढ़ियों और पाखंड
  का तीखा विरोध किया।

उनके लिए सच्ची भक्ति आचरण और नैतिकता में थी, न कि दिखावे में।

3. सामाजिक समानता और मानवता

कबीर ने—

- जाति-भेद,
- ऊँच-नीच,
- छुआछूत
  को अस्वीकार किया।

वे मानव को उसकी मानवीय गरिमा के आधार पर आँकते थे, न कि जन्म से।

4. गुरु का महत्व

कबीर के अनुसार गुरु—

- अज्ञान के अंधकार को दूर करता है,
- ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग दिखाता है।

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।"

5. नाम-स्मरण और आंतरिक शुद्धता

कबीर ने ईश्वर-नाम के स्मरण को

- आत्मशुद्धि का साधन,
- अहंकार त्यागने का मार्ग
  बताया।

	सच्ची साधना मन की निर्मलता से होती है। 6. नैतिक जीवन और सत्य कबीर ने— • सत्य, • प्रेम, • संयम पर आधारित जीवन को सर्वोच्च माना।	
2	गुरु नानक देव की शिक्षाओं की व्याख्या कीजिए।	
	सांकेतिक मूल्य बिंदु: **1. एक ईश्वर का सिद्धांत (एक ओंकार)** **गुरु नानक देव ने एक निराकार, सर्वव्यापी ईश्वर में विश्वास रखा।** **उनके अनुसार वही ईश्वर—** • **सभी धर्मों का आधार है,** • **सभी प्राणियों में समान रूप से विद्यमान है।** **2. नाम जपना (नाम सिमरन)** **गुरु नानक ने ईश्वर के नाम का निरंतर स्मरण करने पर बल दिया।** **यह—** • **मन को शुद्ध करता है,** • **अहंकार को समाप्त करता है,** • **आत्मिक शांति प्रदान करता है।** **3. कर्म की प्रधानता** **उनके अनुसार मुक्ति के लिए—** • **अच्छे कर्म,** • **सत्यनिष्ठ जीवन** **अनिवार्य हैं।** **भाग्य या जन्म नहीं, बल्कि कर्म मनुष्य का भविष्य तय करते हैं।** **4. सामाजिक समानता** **गुरु नानक ने—** • **जाति-भेद,**	

	• छुआछूत, • स्त्री-पुरुष असमानता का विरोध किया। उन्होंने सभी मनुष्यों को ईश्वर की संतान माना। **5.** परिश्रम और ईमानदारी (किरत करो) गुरु नानक ने ईमानदारी से परिश्रम कर जीवनयापन करने को पवित्र बताया। भीख या छल से अर्जित धन को उन्होंने नकारा। **6.** वंड छको (साझेदारी और सेवा) उन्होंने सिखाया कि— • अपनी कमाई दूसरों के साथ बाँटो, • गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा करो। यह सामाजिक न्याय और भाईचारे का आधार है। **7.** कर्मकांड और पाखंड का विरोध गुरु नानक ने— • मूर्ति पूजा, • तीर्थ यात्राओं के आडंबर, • बाह्य दिखावे का विरोध किया।	
3	मध्यकाल के दौरान भारत में चिश्तियों की मुख्य मान्यताओं और शिक्षाओं की व्याख्या कीजिए ।	
	सांकेतिक मूल्य बिंदु: मुख्य मान्यताएँ • **ईश्वर-प्रेम (इश्क-ए-हक़ीकी) :** अल्लाह को एक मानकर उससे प्रेम और भक्ति को जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य माना गया। • **प्रेम और सहिष्णुता :** सभी धर्मों व समुदायों के प्रति प्रेम, सहानुभूति और सहिष्णु व्यवहार पर ज़ोर दिया गया, जिससे हिंदू-मुस्लिम सौहार्द मजबूत हुआ। • **सांसारिक विरक्ति :** धन-दौलत, सत्ता और विलासिता से दूरी बनाकर सादगी, फकीरी और आत्मसंयम को आदर्श माना गया। • **मानव-सेवा :** गरीबों को भोजन कराना (लंगर/सामूहिक रसोई), जरूरतमंदों की मदद करना और समाज के कमजोर वर्गों की सेवा को इबादत जैसा महत्व दिया गया। प्रमुख शिक्षाएँ • **ख़ानक़ाह व्यवस्था :** चिश्ती संतों ने ख़ानक़ाहें स्थापित कीं जो आध्यात्मिक शिक्षा, चर्चा और जन-सेवा के केंद्र बने; यहाँ हर धर्म व जाति के लोग आ सकते थे।	

- **भक्ति का मार्ग और ज़िक्र : नाम-स्मरण, दुआ, रोज़ा, नमाज़ और ज़िक्र के साथ सामूहिक क़व्वाली और सूफी संगीत को आध्यात्मिक उन्नति का माध्यम माना गया।**
- **विनम्रता व समानता : अहंकार छोड़कर नम्रता, क्षमा, भाईचारा और सभी मनुष्यों की समानता की शिक्षा दी; जाति-भेद और ऊँच-नीच को नकारा गया।**
- **धार्मिक सद्भाव : चिश्ती संतों ने स्थानीय भाषाओं और लोक-संस्कृति को अपनाकर हिंदू-मुस्लिम संवाद, आपसी समझ और शांति को बढ़ावा दिया।**

भारतीय समाज पर प्रभाव

- **कई लोग उनकी मानवतावादी शिक्षाओं से प्रभावित होकर सूफी मार्ग से जुड़े, जिससे मध्यकालीन समाज में सहिष्णुता और मेल-मिलाप की भावना सशक्त हुई।**
- **ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती, बाबा फरीद, निज़ामुद्दीन औलिया जैसे संतों की शिक्षा ने लोकभाषाओं, सूफी-साहित्य और भक्ति-आंदोलन पर गहरा प्रभाव डाला।**

4 अंक के प्रश्न

नीचे दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **1 + 1 + 2 = 4**

अमीर खुसरो और कौल

अमीर खुसरो (1253-1325) महान कवि, संगीतज्ञ तथा शेख निज़ामुद्दीन औलिया के अनुयायी थे । उन्होंने कौल (अरबी शब्द जिसका अर्थ है कहावत) का प्रचलन करके चिश्ती *समा* को एक विशिष्ट आकार दिया । कौल को कव्वाली के शुरू और आखिर में गाया जाता था । इसके बाद सूफी कविता का पाठ होता था जो फ़ारसी, हिंदवी अथवा उर्दू में होती थी और कभी-कभी इन तीनों ही भाषाओं के शब्द इसमें मौजूद होते थे । शेख निज़ामुद्दीन औलिया की दरगाह पर गाने वाले कव्वाल अपने गायन की शुरुआत कौल से करते हैं । आज उपमहाद्वीप की सभी दरगाहों पर कव्वाली गाई जाती है ।

अमीर खुसरो ने चिश्ती 'समा' को किस अनोखे रूप में प्रस्तुत किया ?

सांकेतिक मूल्य बिंदु:

अमीर ख़ुसरो ने 'समां' (समा / संगीत–सभा) को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि
ईश्वर से साक्षात्कार का माध्यम बताया।
उनके लिए समां—

- आत्मा को जाग्रत करने वाला अनुभव था,
- प्रेम और भक्ति की चरम अवस्था का प्रतीक था,
- जहाँ संगीत, काव्य और भावना मिलकर आध्यात्मिक उन्माद (वज्द) उत्पन्न करते थे।

चिश्ती–सूफी परंपरा ने अमीर खुसरो की आध्यात्मिकता की समझ को किस प्रकार आकार दिया ?

	सांकेतिक मूल्य बिंदु: चिश्ती परंपरा ने ख़ुसरो की सोच को— • प्रेम, करुणा और मानवतावाद से जोड़ा, • बाह्य कर्मकांड की जगह अंतःकरण की शुद्धता पर बल दिया, • संगीत और काव्य को आध्यात्मिक साधना का वैध साधन माना।	
	कव्वाली में सूफ़ीवाद के महत्त्व का विश्लेषण कीजिए ।	
	सांकेतिक मूल्य बिंदु: कव्वाली सूफ़ीवाद की जीवंत अभिव्यक्ति है। इसमें— • ईश्वर से प्रेम को मानवीय प्रेम के रूपक में व्यक्त किया जाता है, • संगीत, लय और दोहराव से आत्मिक तन्मयता उत्पन्न होती है, • यह धार्मिक सीमाओं से ऊपर उठकर सामूहिक आध्यात्मिक अनुभव कराती है।	
	अध्याय - विजयनगर साम्राज्य	
	1 अंक के प्रश्न	
1.	निम्नलिखित में से कर्नल कोलिन मैकेंजी के संदर्भ में कौन से कथन सही हैं ? सही विकल्प का चयन कीजिए : I. हम्पी के भग्नावशेष 1800 ई. में उसके द्वारा प्रकाश में लाए गए । II. वह ईस्ट इंडिया कम्पनी का एक अधिकारी था । III. उसने इस स्थान का पहला सर्वेक्षण मानचित्र तैयार किया । IV. विजयनगर साम्राज्य की जानकारियाँ उसने दुआर्ते बरबोसा से लीं । **विकल्प :** (A) I, II और III (B) II, III और IV (C) I, III और IV (D) I, II और IV	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: (A) I, II और III	

2	स्तंभ-I का मिलान स्तंभ-II से कीजिए और निम्नलिखित में से सही विकल्प का चयन कीजिए : **स्तंभ-I (विदेशी यात्री)** / **स्तंभ-II (देश)** a. अफानासी निकितिन — I. फारस b. डोमिंगो पेस — II. रूस c. अब्दुर-रज़्ज़ाक — III. पुर्तगाल d. निकोलो-दे-कॉन्ती — IV. इटली **विकल्प :** **a b c d** (A) III IV I II (B) II III I IV (C) I II IV III (D) II I III IV	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(B)**	
3.	निम्नलिखित को कालक्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए : I. तालीकोटा का युद्ध II. नगलपुरम् की स्थापना III. कमलपुरम् जलाशय की स्थापना IV. गोलकुंडा की सल्तनत का उदय **विकल्प :** (A) I, II, III, IV (B) II, III, IV, I (C) III, II, IV, I (D) IV, I, III, II	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(C)**	
4	निम्नलिखित में से कौन-से सूफ़ी दरगाह से संबंधित हैं ? I. मुरीद और मुर्शिद के बीच सिलसिला II. ज़ियारत III. कव्वाली IV. हवन **विकल्प :** (A) I, II और IV (B) II, III और IV (C) I, III और IV (D) I, II और III	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(D)**	

	3 अंक के प्रश्न	
1	उन कारणों का विश्लेषण कीजिए जिनके कारण विजयनगर साम्राज्य का पतन हुआ ।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु: विजयनगर साम्राज्य का पतन कई कारणों और परिस्थितियों का परिणाम था: 1. आंतरिक राजनीति और संघर्ष: ○ साम्राज्य के शासकों और मंत्रियों के बीच सत्ता संघर्ष आम हो गया था। ○ उत्तराधिकारी विवाद और सिंहासन के लिए होने वाले संघर्ष ने प्रशासन को कमजोर कर दिया। 2. सैन्य कमजोरी और पराजय: ○ 1565 ईस्वी में *तालिकोटा की लड़ाई* में विजयनगर सेना को अफ़ज़ल खान और बद्रुल्ला खान के नेतृत्व में गठित आदिलशाही और गोलकुंडा-सुल्तानों की संयुक्त सेना से भयंकर पराजय मिली। ○ इस युद्ध ने साम्राज्य की सैन्य शक्ति को इतनी कमजोर कर दिया कि वह पुनः स्थापित नहीं हो सका। 3. आर्थिक समस्याएँ: ○ लगातार युद्ध और साम्राज्य के क्षेत्रीय विस्तार की लागत ने खजाने पर दबाव डाला। ○ कर और शुल्क का भारी बोझ किसानों और व्यापारियों पर पड़ा, जिससे आर्थिक असंतोष बढ़ा। 4. सामाजिक असंतोष और विद्रोह: ○ किसानों और स्थानीय सामंती रजवाड़ों के बीच असंतोष फैल गया। ○ कुछ क्षेत्रीय अधिकारी और रजवाड़े स्वतंत्रता के पक्ष में थे, जिससे केंद्रीय सत्ता कमजोर हुई। 5. व्यापार और कृषि का ह्रास: ○ तालिकोटा युद्ध के बाद कृषि और व्यापार बुरी तरह प्रभावित हुए। ○ नगरों और बंदरगाहों का विनाश हुआ, जिससे आर्थिक आधार कमजोर हुआ। 6. बाहरी आक्रमण और दबाव: ○ दक्षिण भारत के अन्य सुल्तानतों और मुस्लिम राज्यों का लगातार हमला। ○ यूरोपीय व्यापारियों का बढ़ता प्रभाव और आंतरिक राजनीति में हस्तक्षेप।	
2	अमर–नायक प्रणाली विजयनगर साम्राज्य की एक प्रमुख राजनीतिक खोज क्यों मानी जाती है ? विश्लेषण कीजिए ।	**मुख्य परीक्षा**

	सांकेतिक मूल्य बिंदु: ▯ सैन्य और प्रशासनिक संगठन: • अमर नायक प्रणाली में प्रत्येक नायक (सैनिक या अधिकारी) को निश्चित क्षेत्र या सैनिक बल की जिम्मेदारी दी जाती थी। • नायक अपने क्षेत्र में शासन और सुरक्षा सुनिश्चित करता था और राज्य को कर और सेना उपलब्ध कराता था। ▯ स्थायी सेना का निर्माण: • इस प्रणाली ने फौज को नियमित और संगठित बनाया। • सैनिकों की स्थायित्व और नायक की जिम्मेदारी से युद्धकाल में त्वरित प्रतिक्रिया संभव हुई। ▯ स्थानीय प्रशासन में सुधार: • नायक अपने क्षेत्र के प्रशासन, कर संग्रह और कानून व्यवस्था में प्रभावी रहते थे। • यह प्रणाली राज्य के बड़े भूभाग को नियंत्रित करने में मददगार थी। ▯ राज्य की आर्थिक और सैन्य शक्ति में वृद्धि: • नायक प्रणाली से कर संग्रह और सेना की उपलब्धता सुनिश्चित हुई। • इससे विजयनगर साम्राज्य की राजनीतिक और सैन्य शक्ति मजबूत बनी।	
3	विजयनगर में कृष्णदेव राय की भूमिका का विश्लेषण कीजिए ।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु: ▯ साम्राज्य का विस्तार और सैन्य सफलता: • कृष्णदेव राय ने विजयनगर साम्राज्य का क्षेत्रीय विस्तार किया और उसके उत्तर और दक्षिणी सीमाओं को मजबूत किया। • उन्होंने बारहवीं शताब्दी के बाद पतित राज्य को पुनः सुदृढ़ किया और पड़ोसी मुस्लिम सुल्तान राज्यों के आक्रमणों का प्रभावी मुकाबला किया। ▯ आर्थिक और कृषि सुधार: • उन्होंने कृषि विकास और सिंचाई पर विशेष ध्यान दिया। • नहरों और जलाशयों का निर्माण करवाकर कृषि उत्पादन में वृद्धि की।	

	• व्यापार को प्रोत्साहित किया और दक्षिण भारत में विजयनगर को एक समृद्ध वाणिज्यिक केंद्र बनाया। □ सांस्कृतिक और धार्मिक योगदान: • कृष्णदेव राय ने कला, साहित्य और मंदिर निर्माण को प्रोत्साहित किया। • हंपी और आसपास के क्षेत्रों में भव्य मंदिरों और नगर नियोजन का विकास कराया। • वे स्वयं दानी और धार्मिक दृष्टि से उदार थे, जिससे साम्राज्य की संस्कृति और धर्म को बढ़ावा मिला। □ सामाजिक और प्रशासनिक सुधार: • उन्होंने अमर नायक प्रणाली और प्रशासनिक ढांचे को व्यवस्थित किया। • न्याय और कानून व्यवस्था में सुधार कर सामाजिक स्थिरता सुनिश्चित की।	
4	विजयनगर साम्राज्य में 'महानवमी डिब्बा' के महत्त्व का विश्लेषण कीजिए ।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु: **विजयनगर साम्राज्य में महानवमी-दिब्बा (Mahanavami Dibba) का विशेष महत्व था। इसे समझने के लिए मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं:** **1. राजकीय उत्सव और समारोह स्थल:** ○ **महानौमी-दिब्बा का मुख्य उपयोग महानवमी पर्व (Navaratri festival) और राज्य के अन्य धार्मिक-सामाजिक उत्सवों के लिए किया जाता था।** ○ **यह वह स्थान था जहाँ राजा और उनके दरबारी साम्राज्य की शक्ति और वैभव का प्रदर्शन करते थे।** **2. साम्राज्य की शक्ति का प्रतीक:** ○ **दिब्बा की ऊँचाई और भव्य निर्माण इसे विजयनगर साम्राज्य की राजसी शक्ति और गौरव का प्रतीक बनाते थे।** ○ **यहाँ पर शाही स्वागत समारोह और विजय उत्सव आयोजित किए जाते थे।** **3. कला और स्थापत्य का उदाहरण:** ○ **महानौमी-दिब्बा पर सुंदर भित्ति चित्र और शिल्पकला देखी जा सकती है, जो विजयनगर स्थापत्य और मूर्तिकला की उत्कृष्टता को दर्शाती हैं।** ○ **यहाँ पर युद्ध दृश्य, त्योहार और देवी-देवताओं की मूर्तियाँ उकेरी गई हैं।** **4. सामाजिक और राजनीतिक महत्व:** ○ **यह स्थल जनता और शाही दरबार के बीच संबंध स्थापित करने का माध्यम था।** ○ **दिब्बा से राजा अपने प्रजा को संबोधित करते और साम्राज्य की एकता बनाए रखते थे।**	
5	विजयनगर साम्राज्य के पतन के कारणों का विश्लेषण कीजिए ।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु: विजयनगर साम्राज्य के पतन के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:	

	1. सैन्य पराजय (तालिकोटा युद्ध, 1565 ई.) o आदिलशाही और गोलकुंडा-सुल्तानों की संयुक्त सेना ने विजयनगर को भारी पराजय दी। o इस युद्ध में साम्राज्य की सैन्य शक्ति नष्ट हो गई और शहर लूटा गया। 2. आंतरिक संघर्ष और राजनीतिक अस्थिरता o शासक और उनके मंत्रियों के बीच सिंहासन के लिए संघर्ष और सत्ता की लड़ाई आम हो गई। o उत्तराधिकार विवाद और रियासतों के विद्रोह ने प्रशासन को कमजोर किया। 3. आर्थिक कमजोरी o युद्ध और विस्तार की लागत ने खजाने पर दबाव डाला। o किसानों और व्यापारियों पर भारी कर और शुल्क का बोझ पड़ा। 4. सामाजिक असंतोष और विद्रोह o कुछ रजवाड़ों और स्थानीय अधिकारी राज्य की नीति से असंतुष्ट थे। o आम जनता में असंतोष फैल गया, जिससे साम्राज्य कमजोर हुआ। 5. व्यापार और कृषि का ह्रास o युद्ध और राजनीतिक अस्थिरता से कृषि और व्यापार प्रभावित हुए। o नगरों और बंदरगाहों का विनाश हुआ, जिससे आर्थिक आधार कमजोर पड़ा। 6. बाहरी आक्रमण और दबाव o पड़ोसी मुस्लिम राज्यों का लगातार हमला। o यूरोपीय व्यापारियों का हस्तक्षेप और आंतरिक राजनीति में दबाव।	
6	विजयनगर साम्राज्य के जल स्रोतों के महत्त्व का विश्लेषण कीजिए ।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु: **□ कृषि और सिंचाई** • **जल स्रोतों ने नहरों, जलाशयों और कुओं के माध्यम से कृषि योग्य भूमि में पानी पहुँचाया।** • **इससे फसल उत्पादन बढ़ा और सूखे के समय भी किसान सुरक्षित रहते थे।** **□ आर्थिक समृद्धि** • **पर्याप्त जल उपलब्ध होने से कृषि और व्यापार फल-फूल सके।** • **राज्य की अर्थव्यवस्था मजबूत हुई और कर संग्रह सुचारु हुआ।** **□ सामाजिक और धार्मिक महत्व** • **जल स्रोत धार्मिक अनुष्ठानों और उत्सवों के लिए भी उपयोग किए जाते थे।** • **गाँव और नगरों में जलाशयों के पास सामाजिक गतिविधियाँ संचालित होती थीं।** **□ शहरी नियोजन और नगर संरचना** • **हंपी और अन्य नगरों में जल स्रोतों के आधार पर नगर नियोजन किया गया।** • **यह नगरवासियों के जीवन और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक था।** **□ सैन्य और रणनीतिक महत्व**	

	• जल स्रोतों ने सेना और किलेबंदी के लिए आवश्यक पानी की आपूर्ति सुनिश्चित की। • युद्ध और रक्षा की स्थिति में पानी की उपलब्धता रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण थी।	
	8 अंक के प्रश्न	
1	भारतीय इतिहास में विजयनगर साम्राज्य के महत्त्व का वर्णन कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु: ☐ **सांस्कृतिक और धार्मिक योगदान** • **विजयनगर साम्राज्य ने हिंदू धर्म, कला और स्थापत्य को संरक्षण दिया।** • **हंपी में भव्य मंदिर और स्मारक बने, जिनमें वित्तला मंदिर, वीरुपाक्ष मंदिर प्रमुख हैं।** • **संगीत, नृत्य और साहित्य के क्षेत्र में भी यह काल समृद्ध था।** ☐ **सैन्य और राजनीतिक स्थिरता** • **दक्षिण भारत में मुस्लिम सुल्तानों और अन्य राज्यों के आक्रमणों का प्रभावी मुकाबला किया।** • **अमर नायक प्रणाली और संगठित सेना ने साम्राज्य को लंबे समय तक स्थिर रखा।** ☐ **आर्थिक और वाणिज्यिक महत्व** • **कृषि, सिंचाई और व्यापार में सुधार करके विजयनगर को दक्षिण भारत का समृद्ध वाणिज्यिक केंद्र बनाया।** • **समुद्री व्यापार और आंतरिक बाजारों से राजस्व और संपन्नता सुनिश्चित हुई।** ☐ **जल प्रबंधन और कृषि नवाचार** • **नहरों, जलाशयों और अमर नायक प्रणाली जैसी तकनीकों से जल और कृषि प्रबंधन को विकसित किया।** • **इससे साम्राज्य में खाद्य सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता बनी।** ☐ **राजनीतिक एकता और प्रशासनिक सुधार** • **विजयनगर ने बड़े भूभाग में प्रशासनिक एकता स्थापित की।** • **राज्य का प्रशासनिक ढांचा और न्याय व्यवस्था प्रभावी थे।**	
2	विजयनगर साम्राज्य की धार्मिक वास्तुकला परंपराओं का वर्णन कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु: ☐ **भव्य मंदिर और शिल्पकला** • **विजयनगर में वित्तला मंदिर, वीरुपाक्ष मंदिर, हज़ार स्तंभ हॉल जैसी भव्य धार्मिक संरचनाएँ बनीं।** • **इन मंदिरों में उत्कृष्ट शिल्पकला और नक्काशी की गई, जिसमें देवी-देवताओं, युद्ध दृश्य और नृत्य व संगीत के चित्र उत्कीर्ण हैं।** ☐ **पुस्तकालय और दरबार कक्ष** • **मंदिरों में न केवल पूजा होती थी, बल्कि शिक्षा और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए दरबार कक्ष और सभागार भी होते थे।**	

	□ गोपुरम (प्रवेश द्वार) • **मंदिरों के प्रवेश द्वार यानी गोपुरम ऊँचे और अलंकृत बनाए जाते थे।** • **इन पर भगवान, राक्षस और पौराणिक कथाओं की मूर्तियाँ उकेरी जाती थीं।** **□ जलाशय और नटरंग हॉल** • **मंदिर परिसर में जलाशय और नटरंग हॉल होते थे, जहाँ धार्मिक उत्सव और नृत्य-नाटक आयोजित किए जाते थे।** **□ स्थापत्य शैली और तकनीक** • **पत्थर से निर्मित मंदिरों में टिकाऊ निर्माण तकनीक अपनाई गई।** • **स्थापत्य में दक्षिण भारतीय हृदय शैली (Dravidian style) के तत्व स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।** **□ सामाजिक और धार्मिक महत्व** • **मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का केंद्र भी थे।** • **धार्मिक वास्तुकला ने साम्राज्य की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत किया।**	
	अध्याय - किसान जमींदार और राज्य	
	1 अंक के प्रश्न	
1.	निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए : *स्तंभ I (मुगल समाज में लोग)* — *स्तंभ II (भूमिका)* A. सराफ़ — I. राजस्व वसूली करने वाले B. अमील-गुज़ार — II. मुद्रा की फेर बदल करने वाले C. खुद-काश्त — III. गाँव का मुखिया D. मुकद्दम — IV. गाँव में रहने वाले किसान **विकल्प :** (a) A: IV, B: II, C: III, D: I (b) A: I, B: III, C: II, D: IV (c) A: III, B: IV, C: I, D: II (d) A: II, B: I, C: IV, D: III	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(D)**	

2	16वीं और 17वीं शताब्दी के भारत के कृषि इतिहास को समझने का निम्नलिखित में से प्रमुख स्रोत कौन सा है ? (A) आगरा और दिल्ली के राजस्व रिकॉर्ड (B) किसानों और ज़मींदारों के बीच संबंध (C) आइन-ए-अकबरी, राजवंश का महत्वपूर्ण इतिहास (D) उस समय उगाई जाने वाली कृषि फसलों के प्रकार	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(C)**	
	3 अंक के प्रश्न	
1	मुगल काल के दौरान आम लोगों के अधिकारों की वकालत करने में पंचायत की भूमिका की परख कीजिए ।	
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : ☐ स्थानीय न्याय व्यवस्था • पंचायतें गाँव या मोहल्ले के स्तर पर छोटे-मोटे विवादों और सामाजिक समस्याओं का समाधान करती थीं। • वे मुख्यतः सामाजिक और पारिवारिक मामलों जैसे शादी, संपत्ति, भूमि विवाद आदि में न्याय प्रदान करती थीं। ☐ सामाजिक नियंत्रण और अनुशासन • पंचायतें समाज में नियमों और परंपराओं को बनाए रखने का काम करती थीं। • अनुशासनहीनता या अनैतिक व्यवहार पर उन्हें सजा देने का अधिकार होता था। ☐ स्थानीय प्रशासन में योगदान • पंचायतें गाँव के विकास, पानी की व्यवस्था, कृषि और भूमि संबंधित निर्णयों में मदद करती थीं। • उन्होंने स्थानीय शासन को मजबूत करने और मुग़ल प्रशासन के साथ सहयोग करने में योगदान दिया। ☐ सामाजिक सशक्तिकरण • पंचायतों में आम जनता की भागीदारी होती थी, जिससे लोगों को निर्णय प्रक्रिया में सहभागिता का अवसर मिलता था। • इस तरह वे गाँव की समस्याओं को समझने और समाधान करने का माध्यम बनती थीं।	
	8 अंक के प्रश्न	
1	मुगल ग्रामीण समाज में ज़मींदारों को मिलने वाली सामाजिक और आर्थिक सुविधाओं की व्याख्या कीजिए ।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : ☐ **भूमि का स्वामित्व और कर संग्रह** • **जमींदारों के पास जमीन का प्रबंध और कर संग्रह करने का अधिकार था।**	

	• वे मुग़ल शासन के लिए राजस्व का संग्रह सुनिश्चित करते थे। ☐ राजनीतिक और सामाजिक प्रभुत्व • जमींदार स्थानीय स्तर पर शक्ति और प्रभुत्व रखते थे। • गाँव और छोटे क्षेत्रों में उनका निर्णय और न्याय प्रणाली में प्रभाव था। ☐ सैन्य योगदान • जरूरत पड़ने पर जमींदारों को अपनी सेना मुग़ल शासक के लिए उपलब्ध करानी पड़ती थी। • इस प्रकार वे साम्राज्य की सुरक्षा और सैन्य शक्ति में योगदान देते थे। ☐ आर्थिक स्थिति • जमींदार अक्सर धनवान और संपन्न होते थे। • हालांकि, उन्हें राजस्व समय पर मुग़ल दरबार को देना अनिवार्य था। ☐ सामाजिक जिम्मेदारियाँ • गाँव के विकास, सिंचाई और स्थानीय कानून व्यवस्था में जमींदारों की भूमिका थी। • वे सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों का समर्थन भी करते थे। ☐ उत्थान और पतन की संभावना • राजस्व संग्रह और मुग़ल दरबार के सहयोग के आधार पर जमींदारों की स्थिति स्थिर रहती थी। • परंतु असंतोष या कर भुगतान में चूक होने पर उनका पद और संपत्ति खतरे में आ सकती थी।	
2	"मुगल भारत के ग्रामीण समाज को गाँव के मुखिया की सहायता से, पंचायत द्वारा नियंत्रित किया जाता था ।" कथन की व्याख्या कीजिए ।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : ☐ गाँव का प्रशासन • मुग़ल शासन ने गाँव को एक स्वतंत्र प्रशासनिक इकाई माना। • गाँव के निर्णय और समस्याओं का निपटारा स्थानीय स्तर पर ही करने की व्यवस्था थी। ☐ मुखिया की भूमिका • मुखिया गाँव का प्रमुख होता था और पंचायत के निर्णयों को लागू करने में मदद करता था। • वह मुग़ल प्रशासन के प्रति गाँव का प्रतिनिधि भी माना जाता था। ☐ पंचायत की कार्यप्रणाली • पंचायत में गाँव के बुजुर्ग और प्रतिष्ठित लोग शामिल होते थे। • यह छोटे-मोटे विवाद, सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं का समाधान करती थी। • पंचायत समाज में नियम, अनुशासन और न्याय बनाए रखने का कार्य करती थी।	

	☐ स्थानीय स्तर पर न्याय और विकास • पंचायत और मुखिया की सहायता से गाँव में कानून-व्यवस्था, कर संग्रह और विकास कार्य सुचारु रहते थे। • इस व्यवस्था से मुग़ल प्रशासन को छोटे स्तर पर नियंत्रण और स्थिरता सुनिश्चित होती थी।	
3	मुगल ग्रामीण समाज में महिलाओं के जीवन की व्याख्या कीजिए ।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : ☐ **सामाजिक और पारिवारिक भूमिका** • **महिलाओं का मुख्य कर्तव्य घर और परिवार की देखभाल करना था।** • **वे घरेलू कार्य, बच्चों की परवरिश और घर की व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं।** ☐ **राजसी और राजनीतिक प्रभाव** • **मुग़ल परिवार की महिलाओं, विशेषकर शाही हवेली की रानियों और वीरांगनाओं, का राज्य मामलों में कभी-कभी प्रभाव रहता था।** • **कई महिलाओं ने अपने पुत्रों या पतियों के माध्यम से राजनीति में सक्रिय योगदान दिया। (उदाहरण: नूरजहाँ का शासन में प्रभाव)** ☐ **शिक्षा और संस्कृति** • **अमीर और शाही महिलाओं को साहित्य, कला और संगीत की शिक्षा दी जाती थी।** • **आम महिलाओं की शिक्षा सीमित थी और अधिकतर धार्मिक और घरेलू ज्ञान पर आधारित थी।** ☐ **कानूनी और सामाजिक अधिकार** • **महिलाओं के अधिकार सीमित थे। उन्हें संपत्ति और विवाह के मामलों में पिता या पति की अनुमति की आवश्यकता होती थी।** • **तलाक, विरासत और संपत्ति के मामलों में कानून ने महिलाओं को कुछ हद तक अधिकार दिए थे, पर यह सीमित और वर्ग पर आधारित था।** ☐ **धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन** • **महिलाओं की जीवन शैली धर्म और सामाजिक परंपराओं द्वारा नियंत्रित थी।** • **हिजाब, पर्दा या घर के भीतर रहना अमीर और शाही महिलाओं के जीवन का हिस्सा था।**	
4	"भू-राजस्व मुगल साम्राज्य की आर्थिक बुनियाद थी ।" इस कथन की व्याख्या कीजिए ।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : ☐ **राजस्व संग्रह का आधार** • **मुग़ल शासन ने भूमि को राज्य का मुख्य आर्थिक स्रोत माना।** • **कृषि भूमि से फसल का एक निश्चित अंश या नकद कर राजस्व के रूप में वसूला जाता था।**	

	• अकबर के समय इस प्रणाली को दाहिरा-ए-राजस्व (Ain-i-Dahsala या Todar Mal Bandobast) के रूप में व्यवस्थित किया गया। ☐ अधिकार और जिम्मेदारियाँ • जमींदार और मंसाबदार राजस्व संग्रह के लिए जिम्मेदार थे। • जमींदार किसानों से कर वसूल करते और उसे मुग़ल दरबार में जमा कराते। ☐ फसल आधारित कर प्रणाली • कर राशि का निर्धारण फसल के प्रकार और उत्पादन क्षमता के आधार पर किया जाता था। • आम तौर पर उत्पादन का लगभग 1/3 भाग कर के रूप में लिया जाता था। ☐ नाप और रिकॉर्ड प्रथा • भूमि का मापन, फसल रिकॉर्ड और कर निर्धारण व्यवस्थित रूप से किया जाता था। • लोक-लेखक और अधिकारी (Qanungo, Patwari) इन रिकॉर्डों का रखरखाव करते थे। ☐ संपत्ति और वर्गीकरण • भूमि को उपजाऊ और बंजर वर्ग में विभाजित किया जाता था। • कर का निर्धारण भूमि की उर्वरता और उत्पादन क्षमता के अनुसार किया जाता था। ☐ राज्य और किसान के बीच संतुलन • कर वसूल का तरीका किसानों पर अत्यधिक बोझ न डाले, इस पर ध्यान दिया गया। • इससे आर्थिक स्थिरता बनी और कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई।	
5	*आइन-ए-अकबरी* की विशेषताओं की व्याख्या कीजिए ।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : ☐ व्यापक प्रशासनिक विवरण • "आइने-अकबरी" मुग़ल प्रशासन, राज्य व्यवस्था और शासन की व्यवस्थित जानकारी प्रदान करता है। • इसमें मंसूबेदार, जमींदार और अन्य सरकारी पदाधिकारियों की जिम्मेदारियाँ और वेतन का विवरण मिलता है। ☐ राजस्व और भूमि प्रणाली • इसमें भूमि राजस्व व्यवस्था, कर संग्रह और उत्पादन के विवरण शामिल हैं। • अकबर के **Todar Mal Bandobast** की विधियों का वर्णन किया गया है। ☐ सैन्य और मंसूबादारी प्रणाली • मंसाब प्रणाली और सेना की संरचना का विस्तृत विवरण दिया गया है। • सैनिकों की संख्या, वेतन और पदानुक्रम की जानकारी शामिल है। ☐ सांस्कृतिक और सामाजिक जानकारी • मुग़ल साम्राज्य के धर्म, जाति, रीति-रिवाज और संस्कृति का वर्णन किया गया है।	

	• किसानों, कारीगरों और व्यापारियों की सामाजिक स्थिति का भी उल्लेख है। □ व्यावसायिक और आर्थिक विवरण • व्यापार, उद्योग, उत्पादन और बाजारों के नियम-कायदे का विवरण शामिल है। • राज्य की आर्थिक शक्ति और संसाधनों का रिकॉर्ड प्रस्तुत किया गया है। □ संगठित और तथ्यपरक शैली • यह केवल ऐतिहासिक विवरण नहीं है, बल्कि व्यवस्थित दस्तावेज और सर्वेक्षण का परिणाम है। • इसके लेखक अबुल फज़ल ने इसे अकबर के आदेशानुसार लिखा।	
6	मुगल काल में जंगल में रहने वाले लोगों के जीवन की व्याख्या कीजिए ।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : □ आवास और जीवन शैली • ये लोग जंगलों और पहाड़ी क्षेत्रों में रहते थे। • उनका जीवन प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर था और घर-पौधों व लकड़ी से बने अस्थायी आवासों में रहते थे। □ आजीविका और अर्थव्यवस्था • मुख्यतः शिकार, मछली पकड़ना, वनस्पति और कंद-मूल से जीवन यापन करते थे। • कृषि सीमित रूप से होती थी और अधिकांश लोग स्वयं-सहायता पर निर्भर रहते थे। □ सामाजिक संरचना • इन समुदायों में जनजातीय संगठन और सामूहिक निर्णय प्रणाली प्रचलित थी। • पंचायत या बुजुर्गों की सहायता से सामाजिक और न्यायिक निर्णय लिए जाते थे। □ धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन • जंगल में रहने वाले लोग प्राकृतिक देवी-देवताओं और पूर्वजों की पूजा करते थे। • उनके रीति-रिवाज और त्योहार मुख्यतः प्रकृति और कृषि आधारित होते थे। □ मुगल शासन के साथ संबंध • मुग़ल शासन के समय इन लोगों पर कर या राजस्व का दबाव सीमित था, क्योंकि उन्हें अधिकतर स्वायत्त माना जाता था। • कुछ क्षेत्रों में मुग़ल अधिकारियों ने उनके साथ व्यापार और सैन्य सहयोग भी किया।	
	अध्याय 9 - किसान जमींदार और राज्य	

1.	निम्नलिखित में से कौन सा कथन 16वीं और 17वीं शताब्दी के भारत के ज़मींदारों के बारे में सबसे उपयुक्त है ? (A) ज़मींदार किसानों के लिए शोषक वर्ग थे । (B) राज्य की ओर से वे राजस्व एकत्र करते थे । (C) उनके गाँव वालों के साथ सदैव सौहार्दपूर्ण संबंध थे । (D) उनके पास निजी इस्तेमाल के लिए जमीन के छोटे टुकड़े होते थे ।	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(B)**	
2	निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए : I. संथालों की बस्तियों का विस्तार II. अंग्रेज़ों द्वारा संथालों का शोषण III. दामिन-इ-कोह संथाल भूमि घोषित IV. बीरभूम और भागलपुर जिलों से बना संथाल परगना **विकल्प :** (A) III, II, I, IV (B) I, III, II, IV (C) IV, I, III, II (D) III, I, II, IV	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(A)**	
3.	निम्नलिखित में से 1855 के संथाल विद्रोह का मुख्य कारण कौन सा था ? (A) एकमुश्त बंदोबस्त का अधिरोपण (B) अंग्रेजों द्वारा सांस्कृतिक दमन (C) पाश्चात्य शिक्षा को थोपना (D) भारी कर और भूमि अधिग्रहण	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(D)**	
4	1793 के इस्तमरारी बंदोबस्त के संदर्भ में विषम की पहचान कीजिए । (A) सूर्यास्त कानून (B) बर्दवान की नीलामी (C) पाँचवीं रिपोर्ट (D) दक्कन दंगा आयोग	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(D)**	
	3 अंक के प्रश्न	
1	इस्तमरारी बंदोबस्त लागू होने के बाद ज़मींदारों ने बकाया राशि (राजस्व) के भुगतान में चूक क्यों की ? स्पष्ट कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु :	

	प्रथम, इस्तमरारी बंदोबस्त के अंतर्गत जमींदारों से एक निश्चित (स्थायी) राजस्व राशि तय कर दी गई थी, जिसे हर हाल में समय पर सरकार को देना अनिवार्य था। लेकिन यह राशि वास्तविक कृषि उपज और किसानों की भुगतान क्षमता से मेल नहीं खाती थी। अकाल, बाढ़, सूखा या फसल खराब होने की स्थिति में भी राजस्व में कोई छूट नहीं दी जाती थी, जिससे जमींदार भुगतान नहीं कर पाते थे। द्वितीय, जमींदारों का मुख्य उद्देश्य राजस्व वसूली बन गया, न कि कृषि सुधार। उन्होंने न तो सिंचाई, न बीज, न भूमि सुधार में निवेश किया। परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन स्थिर या घटता गया, जिससे किसानों से अपेक्षित वसूली संभव नहीं हो सकी और जमींदारों पर बकाया बढ़ता गया। तृतीय, किसानों पर अत्यधिक दबाव और शोषण के कारण किसान कर्ज में डूबते गए, भूमि छोड़कर पलायन करने लगे या विद्रोह करने लगे। इससे जमींदारों की आय अनिश्चित हो गई और वे समय पर राजस्व जमा नहीं कर सके। चतुर्थ, अनेक जमींदार वास्तव में पुराने स्थानीय मुखिया या साहूकार थे, जिन्हें प्रशासनिक अनुभव नहीं था। भूमि प्रबंधन, लेखा-जोखा और दीर्घकालिक योजना के अभाव में वे आर्थिक रूप से कमजोर पड़ गए। पंचम, ब्रिटिश सरकार की नीति अत्यंत कठोर थी। राजस्व न चुकाने पर जमींदारी की नीलामी कर दी जाती थी। इससे कई जमींदार हतोत्साहित हुए, भूमि सुधार में रुचि घट गई और अस्थिरता बढ़ी।	
2	बंगाल में पहाड़िया लोगों के प्रति ब्रिटिश नीति की व्याख्या कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **बंगाल में पहाड़िया (पहाड़ों में रहने वाले आदिवासी समुदाय, विशेषकर राजमहल पहाड़ियों के क्षेत्र में) लोगों के प्रति ब्रिटिश नीति मूलतः दमन, नियंत्रण और हाशियाकरण पर आधारित थी। अंग्रेज़ों का उद्देश्य राजस्व की सुरक्षा, व्यापारिक मार्गों की रक्षा और औपनिवेशिक शासन की स्थिरता बनाए रखना था।** **प्रथम, पहाड़िया लोग परंपरागत रूप से स्वतंत्र और स्वशासित जीवन जीते थे। वे जंगल, पहाड़ और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर थे तथा बाहरी शासन को स्वीकार नहीं करते थे। अंग्रेज़ों ने उन्हें "अशांत" और "अपराधी प्रवृत्ति" का मानकर देखा, क्योंकि वे राजस्व वसूली और व्यापारिक मार्गों में बाधा डालते थे।** **द्वितीय, ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्रारंभ में पहाड़िया लोगों को सैन्य बल द्वारा दबाने की नीति अपनाई। उनके गांवों पर हमले किए गए, जंगलों को नियंत्रित किया गया और उनकी आवाजाही सीमित की गई। इसका उद्देश्य उन्हें भयभीत कर अधीन करना था।** **तृतीय, जब दमन से पूर्ण सफलता नहीं मिली, तब अंग्रेज़ों ने समझौता और पृथक्करण की नीति अपनाई। पहाड़िया लोगों को राजमहल की पहाड़ियों तक सीमित कर दिया गया और मैदानी क्षेत्रों में बसने से रोका गया। इसके साथ ही मैदानी इलाकों में संथालों को बसाया गया ताकि वे खेती करें और राजस्व व्यवस्था को मजबूत किया जा सके।** **चतुर्थ, ब्रिटिश प्रशासन ने पहाड़िया समाज की आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना को नज़रअंदाज़ किया। जंगलों पर सरकारी नियंत्रण बढ़ा दिया गया, जिससे उनका पारंपरिक जीवन संकट में पड़ गया। शिकार, झूम खेती और वन संसाधनों के उपयोग पर प्रतिबंध लगाए गए।** **पंचम, इस नीति का परिणाम यह हुआ कि पहाड़िया लोग धीरे-धीरे आर्थिक रूप से कमजोर, सामाजिक रूप से अलग-थलग और राजनीतिक रूप से हाशिये पर चले गए। उनकी जनसंख्या घटने लगी और वे गरीबी व असुरक्षा में फँस गए।**	
3	1813 की पाँचवीं रिपोर्ट के विभिन्न पहलुओं की जाँच कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **पृष्ठभूमि और उद्देश्य** • **यह रिपोर्ट 1813 में ब्रिटिश संसद की सेलेक्ट कमेटी द्वारा तैयार की गई, ताकि ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत में प्रशासन, वित्त और विस्तार की जाँच की जा सके।**	

	• **उद्देश्य था यह पता लगाना कि कंपनी ने भारत में शासन करते हुए राजस्व, सैन्य शक्ति और स्थानीय शासकों के साथ संबंधों को किस प्रकार संभाला और क्या वह ब्रिटिश राष्ट्रीय हितों के अनुरूप काम कर रही है।** **प्रशासनिक और राजनीतिक पहलू** • **रिपोर्ट में बंगाल, मद्रास और बॉम्बे प्रेसीडेंसी की प्रशासनिक व्यवस्था, भ्रष्टाचार, मनमाने निर्णय और भारतीय राज्यों के साथ किए गए संधि-उल्लंघनों की आलोचनात्मक समीक्षा की गई।** • **इसमें वॉरेन हेस्टिंग्स, लॉर्ड कॉर्नवालिस आदि गवर्नर-जनरलों की नीतियों, न्यायिक सुधारों और कलेक्टरों की शक्तियों का विस्तृत लेखा-जोखा प्रस्तुत हुआ, जिससे ब्रिटिश संसद को कंपनी शासन की वास्तविकता समझ में आई।** **आर्थिक और राजस्व संबंधी पहलू** • **पाँचवीं रिपोर्ट ने जमीन-राजस्व व्यवस्था, स्थायी बंदोबस्त, लगान वसूली, व्यापारिक एकाधिकार और कंपनी के लाभ-हानि का विश्लेषण किया, तथा बताया कि कठोर राजस्व-नीति से भारतीय कृषक और जमींदार दोनों पर भारी बोझ पड़ा।** • **रिपोर्ट ने यह भी रेखांकित किया कि सैन्य विस्तार और प्रशासकीय व्यय के कारण कंपनी का राजकोषीय संकट बढ़ रहा था, जिससे ब्रिटिश सरकार को सीधे हस्तक्षेप की आवश्यकता महसूस होने लगी।** **भारतीय समाज व स्थानीय शासकों पर प्रभाव** • **रिपोर्ट ने मराठा, मैसूर, अवध जैसे भारतीय राज्यों के अधीनस्थीकरण, सहायक संधियों और राज्याभिषेक-हस्तक्षेप की नीतियों के सामाजिक-राजनीतिक परिणामों पर टिप्पणी की, जिससे भारतीय प्रभु वर्ग की स्वायत्तता में निरंतर कमी उजागर हुई।** • **इसमें यह संकेत भी था कि कंपनी की युद्ध-नीति और कर-प्रणाली ने भारतीय समाज में असंतोष, आर्थिक विघटन और पारंपरिक सत्ता-संरचनाओं के कमजोर पड़ने की प्रक्रिया को तेज कर दिया।** **ऐतिहासिक महत्व और परिणाम** • **पाँचवीं रिपोर्ट ने 1813 के चार्टर एक्ट के निर्माण को बौद्धिक आधार दिया; इसी दौर में कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार को सीमित किया गया और भारत के प्रति ब्रिटिश संसद की प्रत्यक्ष जिम्मेदारी बढ़ने लगी।** • **इतिहासकारों के लिए यह रिपोर्ट एक महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत मानी जाती है, क्योंकि इसमें 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से 1813 तक के प्रशासनिक दस्तावेज, पत्र-व्यवहार और प्रत्यक्ष गवाहियों का संकलन है, जिनसे औपनिवेशिक नीतियों की आलोचना और समझ दोनों संभव होती हैं।**	
	अध्याय 10 - विद्रोही और राज	
	1 अंक के प्रश्न	
1	निम्नलिखित विकल्पों में से अवध का अधिग्रहण करने के लिए अंग्रेज़ों द्वारा दिए गए कारण की पहचान कीजिए : (A) वाजिद अली शाह का कुशासन (B) युद्ध और पूर्ण अवज्ञा (C) विनियमन अधिनियम (D) विलय की नीति	**पूरक परीक्षा**

	उपयुक्त विकल्प: **(A)**	
2	1857 के विद्रोह में निम्नलिखित में से किसे 'डंका शाह' कहा जाता था ? (A) शाह मल (B) अहमदुल्ला शाह (C) मुहम्मद शाह (D) फिरोज़ शाह	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(B)**	**उत्तर –(A)**
3	निम्नलिखित जानकारी की सहायता से कवि की पहचान कीजिए : • वे एक आधुनिक कवि थीं। • उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर बहुत कुछ लिखा। • 'खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी' — ये पंक्तियाँ उनके द्वारा रचित हैं। **विकल्प :** (A) महादेवी वर्मा (B) सुभद्रा कुमारी चौहान (C) अमृता प्रीतम (D) सरोजिनी नायडू	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(B)**	
4	स्तंभ-I का मिलान स्तंभ-II से कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए : **स्तंभ-I (1857 के विद्रोह का नेतृत्व)** / **स्तंभ-II (क्षेत्र)** a. शाहमल — I. लखनऊ b. कुँवर सिंह — II. कानपुर c. बिरजिस क़द्र — III. बड़ौत d. नाना साहब — IV. आरा **विकल्प :** (A) a: II b: III c: IV d: I (B) a: III b: IV c: I d: II (C) a: III b: II c: I d: IV (D) a: IV b: II c: III d: I	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(D)**	

5	1798 में लॉर्ड वेलेज़्ली द्वारा पेश की गई 'सहायक संधि' की मुख्य विशेषता निम्नलिखित में से कौन सी थी ? (A) अंग्रेजों द्वारा लाई गई मुक्त व्यापार नीति (B) अंग्रेजों द्वारा देशी सेना का रखरखाव (C) अंग्रेजों द्वारा पश्चिमी रीति-रिवाजों को लागू करना (D) अंग्रेजों द्वारा देशी क्षेत्र की सुरक्षा	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(D)**	
	3 अंक के प्रश्न	
1	कल्पना कीजिए कि आपको 1857 के विद्रोह का विस्तृत इतिहास लिखने का काम सौंपा गया है। इसके लिए आप किन स्रोतों का उपयोग करेंगे ? स्पष्ट कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : प्राथमिक स्रोत ब्रिटिश प्रशासनिक दस्तावेज़, गजट, सेना की रिपोर्टें, पत्राचार और यात्रा-वृत्तांत इस क्रांति के समकालीन विवरण प्रदान करते हैं। दिल्ली उर्दू अखबार जैसे समाचार-पत्र दैनिक जीवन पर प्रभाव को दर्शाते हैं, जबकि भारतीय घोषणापत्र (इस्तिहार) हिन्दू-मुस्लिम एकता को उजागर करते हैं। ब्रिटिश अधिकारियों के डायरी और रिपोर्ट उपनिवेशवादी दृष्टिकोण से घटनाओं का वर्णन करते हैं। चित्रात्मक स्रोत चित्रकारियाँ जैसे जोसेफ़ नोएल पैटन की "इन मेमोरियम" और थॉमस जोन्स बार्कर की "रिलीफ़ ऑफ़ लखनऊ" प्रमुख घटनाओं को दर्शाती हैं। ब्रिटिश पत्रिकाओं जैसे पंच और लंदन न्यूज़ में व्यंग्य चित्र ब्रिटिश जनमत को प्रतिबिम्बित करते हैं। आधुनिक संकलन सैयद अहमद खान की "कॉज़ेज़ ऑफ़ द इंडियन रिवोल्ट" (1858) के अनुवादित अंशों वाले संकलन जैसे जेम्स फ्रे की पुस्तक प्राथमिक दस्तावेज़ संग्रह प्रदान करती है। विलियम डालरिम्पल की "द लास्ट मुग़ल" में भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार के म्यूटिनी पेपर्स शामिल हैं, जो दिल्ली के साधारण लोगों के अनुभवों को उजागर करते हैं।	
2	1857 की घटनाओं में दिल्ली के महत्त्व की व्याख्या कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **दिल्ली 1857 की क्रांति का केंद्रीय केंद्र थी, जहाँ विद्रोही सिपाहियों ने मेरठ से पहुँचकर बहादुर शाह जफर को अपना नेता घोषित किया। यह शहर विद्रोह का प्रतीक बन गया और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध एकजुटता का आधार बना।** **राजनीतिक महत्व**	

	बहादुर शाह जफर को विद्रोहियों ने मुगल सम्राट के रूप में पुनः स्थापित किया, जिससे हिन्दू-मुस्लिम एकता मजबूत हुई। दिल्ली पर कब्जा विद्रोह की शुरुआती सफलता का प्रतीक था, जो उत्तर भारत के अन्य क्षेत्रों को प्रेरित करता रहा। लाल किले से जारी घोषणापत्रों ने स्वराज्य की पुकार लगाई। सैन्य महत्व 11 मई 1857 को विद्रोही सिपाहियों ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया, लेकिन ब्रिटिश सेना ने 8 जून से 21 सितंबर तक चली घेराबंदी के बाद शहर पर पुनः अधिकार किया। कश्मीरी गेट से ब्रिटिश प्रवेश निर्णायक साबित हुआ, जिसने विद्रोह को कुचलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दिल्ली की पुनः प्राप्ति ने पूरे विद्रोह को निर्णायक रूप से प्रभावित किया। सामाजिक प्रभाव शहर में अराजकता फैली, अंग्रेज निवासियों का नरसंहार हुआ, लेकिन विद्रोही व्यवस्था बनाए रखने का प्रयास करते रहे। ब्रिटिश पुनः कब्जे के बाद क्रूर दमन हुआ, जिसने दिल्ली को विनाश की चपेट में ला दिया। यह घटना भारतीय राष्ट्रवाद के बीज बोने वाली साबित हुई।	
3	1857 की अफ़वाहों से भारतीयों में डर क्यों फैला ? स्पष्ट कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : प्रमुख अफवाहें एनफील्ड राइफल के कारतूसों में गाय की चर्बी (हिंदुओं के लिए अपवित्र) और सूअर की चर्बी (मुस्लिमों के लिए अपवित्र) का उपयोग होने की अफवाह फैली, जिसे मुंह से काटना पड़ता था। इससे हिंदू-मुस्लिम सिपाहियों में एकजुट भय उत्पन्न हुआ और उन्होंने कारतूस लोड करने से इनकार कर दिया। मंगल पांडे ने इसी अफवाह से प्रेरित होकर बैरकपुर में विद्रोह शुरू किया। प्रभाव ये अफवाहें सैनिक असंतोष को व्यापक विद्रोह में बदलने वाली बनीं, जो मेरठ से दिल्ली तक फैल गई। अफवाहों ने ब्रिटिशों के ईसाईकरण की साजिश और सांस्कृतिक हस्तक्षेप के भय को बढ़ावा दिया, जिससे सिपाहियों ने बहादुर शाह जफर को नेता स्वीकार किया। हालांकि लॉर्ड कैनिंग ने कारतूस वापस ले लिए, तब तक विद्रोह भड़क चुका था।	
4	"1857 के विद्रोह को ऐसे युद्ध के रूप में देखा जा रहा था जिसमें हिंदुओं और मुसलमानों दोनों का नफा-नुकसान बराबर था।" इस कथन का विश्लेषण कीजिए।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : 1857 ईसवी की क्रांति में हिंदू और मुसलमानों का नफा (लाभ) और नुकसान (हानि) समान रूप से बराबर था, क्योंकि दोनों समुदायों ने संयुक्त रूप से ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लड़ाई लड़ी और दमन का समान भागीदार बने। यह कथन उनकी अभूतपूर्व एकता को रेखांकित करता है, जहाँ साझा शहादतें और कुर्बानियाँ दोनों के लिए समान रूप से प्रेरणादायक सिद्ध हुईं। संयुक्त लाभ दोनों समुदायों ने युद्ध संचालन समिति में आधे-आधे प्रतिनिधि रखे, जिससे हिंदू-मुस्लिम एकता की मिसाल कायम हुई। मेरठ के 85 विद्रोही सिपाहियों में 51 मुसलमान और 34 हिंदू थे, जिन्होंने साझा सजा भुगती। इसने राष्ट्रवाद का बीज बोया, जो बाद के स्वतंत्रता संग्रामों के लिए आधार बना।	

	समान हानियाँ ब्रिटिश दमन में दोनों समुदायों के नेता, सिपाही और नागरिक नष्ट हुए; बहादुर शाह जफर (मुस्लिम) को निर्वासित किया गया, जबकि हिंदू राजाओं को भी समाप्त कर दिया गया। अंग्रेजों ने इस एकता से भयभीत होकर 'फूट डालो और राज करो' नीति अपनाई, लेकिन तात्कालिक हानि दोनों की बराबर रही। ऐतिहासिक व्याख्या यह कथन वास्तविकता को दर्शाता है, क्योंकि विद्रोह में धार्मिक भेदभाव न्यून था और साझा दुश्मन के विरुद्ध संघर्ष समान रूप से प्रभावित करने वाला था। कुछ आधुनिक विवाद एकता के मिथक पर सवाल उठाते हैं, किंतु समकालीन दस्तावेज़ साझी शहादतों की पुष्टि करते हैं।	
5	कला और साहित्य ने 1857 की स्मृतियों को जीवित रखने में कैसे योगदान दिया है ? परख कीजिए।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : काल और साहित्य ने 1857 ईसवी की क्रांति की स्मृतियों को जीवंत रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया, क्योंकि उन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं को काव्यात्मक और साहित्यिक रूप से संरक्षित किया। कवियों ने वीर रसपूर्ण रचनाओं से क्रांतिकारियों की शहादतों को अमर बनाया, जबकि साहित्यकारों ने उपन्यासों और नाटकों के माध्यम से सामाजिक-राजनीतिक संदर्भों को उजागर किया। काल का योगदान सुभद्रा कुमारी चौहान की "झांसी की रानी" कविता ने लक्ष्मीबाई की वीरता को लोकप्रिय बनाया, जो क्रांति की स्मृति को पीढ़ियों तक पहुँचाती रही। मैथिलीशरण गुप्त, निराला और पंत जैसे कवियों ने राष्ट्रवाद को प्रेरित करते हुए स्वर्णिम अतीत की याद दिलाई, जैसे गुप्त का "हम क्या थे, क्या हो गए"। लोक साहित्य में राजस्थानी लोकगीत, मराठी लावणियाँ और बांग्ला तमाशा ने जन-चेतना को जगाया। साहित्य का योगदान वृन्दावनलाल वर्मा का उपन्यास "झांसी की रानी" ने ऐतिहासिक पात्रों को जीवंत किया। वी.डी. सावरकर की "1857 का स्वतंत्रता समर" ने भारतीय दृष्टिकोण से इतिहासलेखन को नया आयाम दिया, जबकि राही मासूम रज़ा की "1857 क्रांति कथा" ने सामाजिक यथार्थ चित्रित किया। पत्रकारिता के माध्यम से तिलक और गांधी ने समाचार-पत्रों द्वारा स्मृतियों को प्रचारित किया।	
	अध्याय 11 - महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन	
	1 अंक के प्रश्न	

1	निम्नलिखित को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए और सही विकल्प का चयन कीजिए : I. चम्पारन सत्याग्रह II. बारदोली सत्याग्रह III. खेड़ा सत्याग्रह IV. रॉलेट सत्याग्रह **विकल्प :** (A) II, I, III, IV (B) III, IV, I, II (C) I, III, IV, II (D) IV, II, III, I	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प: **(c)**	
	8 अंक के प्रश्न	
1	"गाँधीवादी राष्ट्रवाद में असहयोग आंदोलन महत्त्वपूर्ण था ।" इस कथन को न्यायसंगत ठहराइए ।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **1. जनआंदोलन के रूप में राष्ट्रवाद का विस्तार** **असहयोग आंदोलन (1920–22) के माध्यम से महात्मा गाँधी ने राष्ट्रवाद को सीमित शिक्षित वर्ग से निकालकर किसानों, मजदूरों, महिलाओं और छात्रों तक पहुँचाया। पहली बार भारतीय जनता ने स्वयं को राष्ट्रीय आंदोलन का सक्रिय भागीदार माना।** **2. अहिंसा और सत्याग्रह का व्यावहारिक प्रयोग** **गाँधी के राष्ट्रवाद की आत्मा अहिंसा थी। असहयोग आंदोलन ने बिना हथियार उठाए ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देने का रास्ता दिखाया। यह नैतिक शक्ति पर आधारित संघर्ष था, जिसने भारतीय राष्ट्रवाद को एक अलग पहचान दी।** **3. औपनिवेशिक शासन की वैधता को चुनौती** **सरकारी स्कूलों, कॉलेजों, अदालतों, विदेशी वस्तुओं और उपाधियों के बहिष्कार से अंग्रेजी शासन की नैतिक और प्रशासनिक नींव कमजोर हुई। इससे जनता में यह भावना प्रबल हुई कि विदेशी शासन सहयोग के बिना टिक नहीं सकता।** **4. स्वराज की अवधारणा को स्पष्टता** **असहयोग आंदोलन के दौरान 'स्वराज' एक ठोस और जनप्रिय लक्ष्य बना। गाँधी के अनुसार स्वराज केवल राजनीतिक सत्ता नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता, आत्मअनुशासन और आत्मसम्मान का प्रतीक था।** **5. राष्ट्रीय एकता का निर्माण** **हिंदू–मुस्लिम एकता को मजबूत करने के लिए खिलाफत आंदोलन को असहयोग से जोड़ा गया। इससे गाँधी के समावेशी राष्ट्रवाद का स्वरूप सामने आया, जिसमें सभी समुदायों की भागीदारी आवश्यक मानी गई।** **6. भविष्य के आंदोलनों की आधारशिला** **यद्यपि यह आंदोलन चौराचौरा घटना के बाद वापस ले लिया गया, फिर भी इसने भारतीय जनता को राजनीतिक रूप से प्रशिक्षित किया। आगे चलकर सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलन इसी अनुभव पर आधारित थे।**	

2	"गाँधीजी को ग़रीबों के प्रति गहरी सहानुभूति के तहत एक 'जन नेता' के रूप में देखा जाने लगा।" इस कथन की परख कीजिए।	**पूरक परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **1.** जन–जीवन से सीधा जुड़ाव गाँधीजी ने किसानों, मजदूरों, दलितों और महिलाओं के दुःख–दर्द को समझा और उनके बीच रहकर काम किया। चंपारण, खेड़ा और अहमदाबाद जैसे आंदोलनों ने उन्हें आम जनता का नेता बना दिया। **2.** सरल जीवन और सादगी गाँधीजी का पहनावा, खान–पान और रहन–सहन आम भारतीयों जैसा था। इससे जनता ने उन्हें अपना माना और उनके प्रति गहरा विश्वास विकसित हुआ। **3.** अहिंसा और सत्याग्रह की नीति हिंसा के स्थान पर अहिंसक संघर्ष का मार्ग अपनाकर उन्होंने जनता को बिना भय के आंदोलन में भाग लेने का अवसर दिया। यह तरीका जन–भागीदारी के लिए अनुकूल था। **4.** भारतीय भाषाओं और प्रतीकों का प्रयोग गाँधीजी ने हिंदी, गुजराती जैसी भारतीय भाषाओं में संवाद किया और चरखा, खादी जैसे स्वदेशी प्रतीकों को अपनाया, जिससे वे जनमानस से जुड़ सके। **5.** सामाजिक सुधारों पर बल छुआछूत, शराबबंदी, नारी सम्मान और ग्राम स्वराज जैसे मुद्दों को उठाकर उन्होंने राष्ट्रवाद को सामाजिक सुधार से जोड़ा, जो जनता की रोजमर्रा की चिंताओं से संबंधित था। **6.** नेतृत्व में नैतिकता और आत्मबल गाँधीजी का नेतृत्व बल या पद पर नहीं, बल्कि नैतिक शक्ति और आत्मसंयम पर आधारित था। इससे लोग स्वेच्छा से उनके नेतृत्व को स्वीकार करने लगे। **7.** राष्ट्रीय आंदोलनों का जन–आंदोलन बनना असहयोग, सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलन को उन्होंने व्यापक जन–आंदोलन का रूप दिया, जिससे वे पूरे देश के नेता के रूप में स्थापित हुए।	
3	1915 से 1931 तक भारत में राष्ट्रीय गतिविधियों के भारतीय जनता पर पड़े प्रभावों का विश्लेषण कीजिए ।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **1.** राजनीतिक चेतना का व्यापक प्रसार **1915** के बाद राष्ट्रीय आंदोलन केवल शिक्षित मध्यम वर्ग तक सीमित नहीं रहा। असहयोग आंदोलन **(1920–22)**, सविनय अवज्ञा आंदोलन **(1930–31)** के माध्यम से किसानों, मजदूरों, महिलाओं और छात्रों में राजनीतिक जागरूकता फैली। जनता ने स्वयं को शासन का विषय नहीं, बल्कि राष्ट्र का नागरिक समझना शुरू किया। **2.** जन–भागीदारी में वृद्धि पहली बार ग्रामीण भारत बड़ी संख्या में राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ा। किसानों ने कर न देने, मजदूरों ने हड़तालें करने और महिलाओं ने सभाओं व सत्याग्रह में भाग लेकर आंदोलन को जन–आधारित बना दिया।	

	3. ब्रिटिश शासन के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन इस काल में अंग्रेजी शासन की नैतिक वैधता पर प्रश्न उठे। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार, सरकारी संस्थाओं से दूरी और कर–अस्वीकार ने जनता के मन से भय को समाप्त किया और आत्मविश्वास को बढ़ाया। **4.** सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय एकता गाँधीजी ने छुआछूत उन्मूलन, नारी सशक्तिकरण, खादी और स्वदेशी के प्रचार के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन को सामाजिक सुधार से जोड़ा। हिंदू–मुस्लिम एकता का प्रयास (खिलाफत आंदोलन) भी इसी काल की महत्वपूर्ण उपलब्धि थी, यद्यपि यह स्थायी न रह सकी। **5.** आर्थिक चेतना का विकास स्वदेशी आंदोलन, खादी के प्रयोग और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार से आत्मनिर्भरता की भावना विकसित हुई। जनता ने आर्थिक शोषण को राष्ट्रीय गुलामी से जोड़कर देखना शुरू किया। **6.** नैतिक और मानसिक परिवर्तन अहिंसा और सत्याग्रह ने जनता को अनुशासन, त्याग और नैतिक साहस का पाठ पढ़ाया। जेल जाना अपमान नहीं, बल्कि गौरव माना जाने लगा।	
	अध्याय 12 - संविधान का निर्माण	
	1 अंक के प्रश्न	
1	संविधान सभा के सदस्यों को उनके द्वारा उठाए गए मुद्दों के साथ मिलाइए : *स्तंभ I* (मुद्दे) — *स्तंभ II* (संविधान सभा के सदस्य) a. जनजाति कल्याण — i. एन.जी. रंगा b. दलित वर्ग — ii. जे. नगप्पा c. महिलाओं के लिए न्याय — iii. जयपाल सिंह d. किसान कल्याण — iv. हंसा मेहता **विकल्प :** (A) a-i, b-ii, c-iv, d-iii (B) a-iii, b-ii, c-iv, d-i (C) a-iv, b-iii, c-i, d-ii (D) a-ii, b-iii, c-iv, d-i	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प : (B)	
2	निम्नलिखित में से किसने संविधान सभा में 'उद्देश्य प्रस्ताव' पारित किया ? (A) वल्लभभाई पटेल (B) राजेन्द्र प्रसाद (C) जवाहरलाल नेहरू (D) भीमराव अम्बेडकर	**पूरक परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प : (c)	

3	निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सुमेलित है ? **सूची-I (संविधान सभा की प्रमुख समितियों के नाम)** — **सूची-II (अध्यक्ष के नाम)** (A) झंडा समिति – एच.सी. मुखर्जी (B) संघ शक्ति समिति – पंडित जवाहरलाल नेहरू (C) नियम समिति – एस. वरदाचार्य (D) राज्य समिति – जे.बी. कृपलानी	
	उपयुक्त विकल्प : (B)	
4	निम्नलिखित जानकारी की सहायता से संविधान सभा के सदस्य की पहचान कीजिए : ● वे संविधान सभा के अध्यक्ष थे । ● वे स्वतंत्र भारत के पहले राष्ट्रपति थे । (A) सर्वपल्ली राधाकृष्णन (B) जाकिर हुसैन (C) वी.वी. गिरि (D) राजेन्द्र प्रसाद	**मुख्य परीक्षा**
	उपयुक्त विकल्प : (D)	
	3 अंक के प्रश्न	
1	संविधान सभा में डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की भूमिका का वर्णन कीजिए ।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : 1. प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में भूमिका डॉ. आंबेडकर प्रारूप समिति (Drafting Committee) के अध्यक्ष थे। इस समिति का कार्य संविधान के मसौदे को अंतिम रूप देना था। उन्होंने विभिन्न समितियों की सिफारिशों को समन्वित कर एक सुसंगत और व्यावहारिक संविधान तैयार किया। 2. मौलिक अधिकारों का संरक्षण आंबेडकर ने संविधान में समानता का अधिकार, कानून के समक्ष समानता, धर्म, जाति और लिंग के आधार पर भेदभाव का निषेध सुनिश्चित किया। ये प्रावधान वंचित वर्गों के लिए सुरक्षा कवच बने। 3. सामाजिक न्याय और आरक्षण की व्यवस्था उन्होंने अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए आरक्षण का समर्थन किया, ताकि ऐतिहासिक	

	अन्याय की भरपाई हो सके। उनका मानना था कि राजनीतिक लोकतंत्र तब तक अधूरा है जब तक सामाजिक लोकतंत्र स्थापित न हो। 4. अस्पृश्यता का उन्मूलन डॉ. आंबेडकर के प्रयासों से संविधान के अनुच्छेद 17 में अस्पृश्यता को पूर्णतः समाप्त किया गया। यह भारतीय समाज में समानता की दिशा में ऐतिहासिक कदम था। 5. संघीय शासन और मजबूत केंद्र उन्होंने भारत के लिए एक ऐसे संघीय ढांचे का समर्थन किया जिसमें संकट की स्थिति में केंद्र को पर्याप्त शक्तियाँ हों। इससे राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बल मिला। 6. संसदीय लोकतंत्र और विधि शासन आंबेडकर ने संसदीय प्रणाली, स्वतंत्र न्यायपालिका और विधि के शासन (Rule of Law) की वकालत की। उन्होंने संविधान को लचीला और परिवर्तनशील बनाए रखने पर भी बल दिया। 7. संविधान सभा में प्रभावी वक्तृत्व आंबेडकर अपने तार्किक, स्पष्ट और विद्वत्तापूर्ण भाषणों के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने आलोचनाओं का सटीक उत्तर देकर संविधान के प्रावधानों का सशक्त बचाव किया।	
2	भारत की राष्ट्र भाषा पर गांधीजी के विचारों का वर्णन कीजिए ।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **1. राष्ट्रभाषा का उद्देश्य** **गाँधीजी मानते थे कि राष्ट्रभाषा वह होनी चाहिए जिसे देश का सामान्य जन सहज रूप से समझ सके। उनके लिए भाषा का प्रमुख उद्देश्य जनता और नेतृत्व के बीच सीधा संवाद स्थापित करना था।** **2. हिंदी–हिंदुस्तानी का समर्थन** **गाँधीजी ने 'हिंदुस्तानी' को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने पर जोर दिया। उनके अनुसार हिंदुस्तानी, जो देवनागरी और उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सकती है, उत्तर और दक्षिण, हिंदू और मुसलमान—सभी को जोड़ने वाली भाषा हो सकती है।** **3. अंग्रेजी के वर्चस्व का विरोध** **गाँधीजी अंग्रेजी को शासन और शिक्षा की भाषा बनाए रखने के पक्ष में नहीं थे। उनका मानना था कि अंग्रेजी विदेशी शासन की मानसिक गुलामी को बनाए रखती है और आम जनता को सत्ता से दूर करती है।** **4. प्रांतीय भाषाओं का सम्मान** **राष्ट्रभाषा के साथ–साथ गाँधीजी ने मातृभाषाओं और प्रांतीय भाषाओं के संरक्षण पर भी बल दिया। वे किसी एक भाषा को अन्य भाषाओं पर थोपने के विरुद्ध थे।** **5. शिक्षा और स्वराज से संबंध** **गाँधीजी के अनुसार सच्चा स्वराज तभी संभव है जब शिक्षा, प्रशासन और न्याय की भाषा जनता की अपनी भाषा हो। इससे आत्मनिर्भरता और लोकतांत्रिक चेतना का विकास होता है।**	

	6. राष्ट्रीय एकता का माध्यम **उन्होंने राष्ट्रभाषा को सांस्कृतिक एकता का सेतु माना। गाँधीजी का विश्वास था कि साझा भाषा से आपसी समझ बढ़ेगी और राष्ट्रीय आंदोलन को बल मिलेगा।**	
3	भारत के संयुक्त दृष्टिकोण पर जी.बी. पंत के विचारों को स्पष्ट कीजिए ।	**मुख्य परीक्षा**
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **1. एकीकृत और अखंड भारत की अवधारणा** **जी. बी. पंत का मानना था कि भारत की शक्ति उसकी एकता में निहित है। वे किसी भी प्रकार की क्षेत्रीय, भाषायी या सांप्रदायिक विभाजनकारी प्रवृत्तियों के विरोधी थे। उनके अनुसार एक मजबूत केंद्र ही भारत की अखंडता को सुरक्षित रख सकता है।** **2. विविधता में एकता का समर्थन** **पंत जी भारत की सांस्कृतिक, भाषायी और सामाजिक विविधता को उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि शक्ति मानते थे। वे चाहते थे कि विभिन्न समुदाय और भाषाएँ अपनी पहचान बनाए रखें, लेकिन राष्ट्रीय हित सर्वोपरि रहे।** **3. धर्मनिरपेक्ष और समावेशी दृष्टि** **जी. बी. पंत ने धर्म को राजनीति से अलग रखने पर बल दिया। वे सभी नागरिकों के लिए समान अधिकारों के पक्षधर थे और अल्पसंख्यकों को पूर्ण सुरक्षा देने को भारत की एकता के लिए आवश्यक मानते थे।** **4. लोकतंत्र और संवैधानिक शासन** **संविधान सभा में पंत जी ने संसदीय लोकतंत्र, स्वतंत्र न्यायपालिका और विधि के शासन का समर्थन किया। उनका विश्वास था कि संवैधानिक व्यवस्था ही भारत को स्थायी रूप से एकजुट रख सकती है।** **5. भाषायी नीति पर संतुलित दृष्टिकोण** **उन्होंने हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में स्वीकार करने का समर्थन किया, परंतु अन्य भारतीय भाषाओं के सम्मान और संरक्षण पर भी जोर दिया। वे भाषा के आधार पर विभाजन के विरुद्ध थे।** **6. सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय एकता** **पंत जी का मानना था कि सामाजिक असमानता राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा है। इसलिए उन्होंने समानता, न्याय और अवसर की समता को संयुक्त भारत की नींव बताया।**	
	4 अंक के प्रश्न	

1	दिए गए स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : *1+1+2=4* **''खंडित निष्ठा के लिए कोई जगह नहीं''** गोविंद बल्लभ पंत ने कहा कि निष्ठावान नागरिक बनने के लिए लोगों को समुदाय और खुद को बीच में रख कर सोचने की आदत छोड़नी होगी : लोकतंत्र की सफलता के लिए व्यक्ति को आत्मानुशासन की कला का प्रशिक्षण लेना होगा। लोकतंत्र में व्यक्ति को अपने लिए कम तथा औरों के लिए ज़्यादा फिक्र करनी चाहिए। यहाँ खंडित निष्ठा के लिए कोई जगह नहीं है। सारी निष्ठाएँ केवल राज्य पर केंद्रित होनी चाहिए। यदि किसी लोकतंत्र में आप प्रतिस्पर्धी निष्ठाएँ रख देते हैं या ऐसी व्यवस्था खड़ी कर देते हैं जिसमें कोई व्यक्ति या समूह अपने अपव्यय पर अंकुश लगाने की बजाय बृहत्तर या अन्य हितों की जरा भी परवाह नहीं करता, तो ऐसे लोकतंत्र का डूबना निश्चित है। *संविधान सभा बहस*, खंड 2	**पूरक परीक्षा**
	जी.बी. पंत ने लोकतंत्र में आत्मानुशासन के महत्त्व पर जोर क्यों दिया ?	
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **गोविंद बल्लभ पंत का मानना था कि लोकतंत्र केवल संस्थाओं या कानूनों से नहीं चलता, बल्कि नागरिकों के आत्मसंयम, कर्तव्यबोध और नैतिक जिम्मेदारी से सशक्त होता है। इसी कारण उन्होंने लोकतंत्र में आत्मशासन (Self-discipline / Self-government) के महत्व पर विशेष ज़ोर दिया।**	
	निष्ठा का क्या अर्थ है ?	
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **निष्ठा का अर्थ है — पूरी ईमानदारी, समर्पण और दृढ़ आस्था के साथ किसी व्यक्ति, सिद्धांत, कर्तव्य या लक्ष्य के प्रति वफादार रहना।**	
	उनके अनुसार लोकतंत्र की सफलता की कुंजी क्या है ?	
	सांकेतिक मूल्य बिंदु : **उनका मानना था कि—** • **लोकतंत्र केवल संविधान, कानून या संस्थाओं से नहीं चलता,** • **बल्कि वह नागरिकों के नैतिक चरित्र, आत्मसंयम और कर्तव्यबोध पर आधारित होता है।**	